मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय, भोपाल
(राज्य विधानसभा द्वारा अधिनियम 1991 के तहत स्थापित)
(राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद द्वारा 'A' ग्रेड प्रदत्त)
E-NEWS LETTER
VOL: 2024-III JULY-SEPTEMBER HTTPS://MPBOU.EDU.IN

भारतीय ज्ञान परंपरा राजनीति शास्त्र और राजनीतिक चिंतन
02 एवं 03/07/ 2024

मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय में 2 जुलाई 2024 को भारतीय ज्ञान परंपरा पर आधारित दो दिवसीय कार्यशाला का उद्घाटन हुआ। कार्यशाला का विषय था "भारतीय ज्ञान परंपरा: राजनीति शास्त्र और राजनीतिक चिंतन"। कार्यशाला की शुरुआत राजनीति शास्त्र के प्रबुद्ध विद्वानोंकी उपस्थित में हुई। कार्यशाला का आयोजन भोज विश्वविद्यालय के अकादमिक समन्वय विभाग द्वारा कराया गया है। कार्यशाला में मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. ए.डी. एन. बाजपेयी, कुलपति, अटल बिहारी वाजपेई विश्वविद्यालय, बिलासपुर, विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रो. चांद किरण सलूजा, संस्कृत संवर्धन प्रतिष्ठान, नई दिल्ली एवं प्रो. सुषमा यादव, सम-कुलपति, हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय, महेंद्रगढ़ उपस्थित रहे। कार्यशाला की अध्यक्षता मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो. संजय तिवारी द्वारा की गई एवं कार्यशाला संयोजक के रूप में मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. सुशील मंडेरिया उपस्थित रहे। दो दिवसीय कार्यशाला में संपूर्ण मध्य प्रदेश के विभिन्न कॉलेजों एवं विश्वविद्यालयों के शिक्षक एवं प्राध्यापकगण ने भारी संख्या में कार्यशाला में सहभागिता की। कार्यशाला का आयोजन मध्य प्रदेश के भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय के सभागार में किया गया।

कार्यशाला की शुरुआत में स्वागत उपरांत कार्यक्रम के नोडल अधिकारी प्रो. उत्तम सिंह चौहान ने विषय प्रवर्तन करते हुए उपस्थित सभी राजनीति शास्त्र के शिक्षकों, अध्यापकों को कार्यशाला और विषय से परिचित कराते हुए कहा कि, किसी भी सभ्यता और संस्कृति की जड़े इसकी परंपरागत ज्ञान से जुड़ी होती हैं। इस कार्यशाला का उद्देश्य स्नातक प्रथम वर्ष के विभिन्न प्रश्न पत्रों में भारतीय ज्ञान परंपरा को समाहित करने पर चिंतन करना होगा।

प्रो. ए.डी.एन. बाजपेयी कुलपति, अटल बिहारी वाजपेई विश्वविद्यालय, बिलासपुर ने अपने विषय विचार प्रकट करते हुए कहा कि, राष्ट्रीय शिक्षा नीति का राष्ट्रीय चरित्र है। राष्ट्रवादिता ही राष्ट्रीयता है। हमको राष्ट्रवादी शिक्षा नीति मिली है। यह शिक्षा नीति राष्ट्र उपयोगी एवं समाज उपयोगी, नागरिकों का निर्माण करने का उद्देश्य रखती है। इसका उद्देश्य विश्व स्तर पर शिक्षा के क्षेत्र में भारत को सुपर पावर बनाना है। भारत के पास लिखित और मौखिक ज्ञान का अपार भंडार है। लेकिन पिछले कुछ वर्षों में इसके ऊपर राख की परत जम गई है। जिसे हमें साफ करने की आवश्यकता है। डॉ. वाजपेई ने इस बात पर जोर दिया कि, हमें अपनी भाषा मेंअपनी बात लिखने की आदत डालनी चाहिए।

डॉ. चाँद किरण सलूजा, ने विषय पर अपने भाव व्यक्त करते हुए कहा कि, भारतीय भाषा में पुस्तकों को लिखा जाना चाहिए। विद्यार्थी अनुभव से सीखता है और सभी सिद्धांत अनुभव से ही सीखे जाते हैं। राजनीतिक सिद्धांत लोक अनुभव पर आधारित होता है। ज्ञान आज का हो या प्राचीन हो मनुष्य के अनुभव समान होते हैं। भारत के वेद और उपनिषदों में राजनीति के कई सिद्धांत समाहित हैं। डॉ. सलूजा ने कहा कि, 21वीं सदी में शिक्षा के चार स्तंभ है। पहला जानने के लिए शिक्षा, दूसरा करने के लिए शिक्षा, तीसरा एक साथ रहने के लिए शिक्षा और चौथा मनुष्य बनने के लिए शिक्षा यह सारे स्तंभ भारतीय संस्कृति के विद्वान डॉ.करण सिंह द्वारा यूनेस्को को दिए गए हैं। ज्ञान मनुष्य का तीसरा नेत्र है। उन्होंने कहा कि, गुरु वही है जो,अंधकार को हटाए। भारतीय परंपरा में उल्लेख है कि, पहले जानो, फिर चिंतन करो, फिर उसका अभ्यास करो और उस ज्ञान को जीवन की समस्याओं को हल करने के लिए उपयोग करो और इसके पश्चात इस ज्ञान का प्रसार करो। यह हमारे ज्ञान परंपरा में निहित है। उन्होंने कहा कि, मानवीय मूल्यों का होना नागरिकों में अनिवार्य है। ज्ञान हमेशा सत्य की खोज करता है। राजनीति शास्त्र का आधार भारतीय ज्ञान परंपरा में समाहित है।

डॉ. सुषमा यादव, सम-कुलपति, हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय, महेंद्रगढ़ ने अपने उद्बोधन में कहा कि, वर्षों से जो हम पढ़ते आए हैं, वह हममे रच बस गया है। इसलिए यह परिवर्तन एकदम से होना आसान नहीं है। राष्ट्र की बात ऋग्वेद में मिलती है। चाणक्य ने हमें राजनीतिक अर्थतंत्र का सिद्धांत दिया है।उन्होंने कहा कि, इन विषयों को हमें भारतीय दृष्टिकोण से देखना होगा। भारत हजारों वर्षों की सभ्यता है। हमें युवाओं को राष्ट्र के प्रति गौरव का बोध दिलाने वाली शिक्षा देना होगा। भारत में सर्वत्र ज्ञान बिखरा हुआ है। इन मोतियों को ढूंढ कर हमें एक माला में पिरोना होगा। ऋग्वेद से हमारा राष्ट्रीय चिंतन शुरू होता है। भारतीय ज्ञान परंपरा प्रश्नों को आमंत्रित करती है। डॉ यादव ने इस बात पर चिंता व्यक्त की कि, भारतीय भाषाओं में पुस्तकों का अभाव है। यदि हमारे पौराणिक ग्रन्थ को पढ़ाना है तो, इसके लिए हमें संस्कृत पढ़ना होगा।

भोज मुक्त विवि में दो दिवसीय कार्यशाला

राष्ट्रीय शिक्षा नीति का चरित्र राष्ट्रीय है

मध्य स्वदेश संवाददाता ■ भोपाल

राष्ट्रीय शिक्षा नीति का राष्ट्रीय चरित्र है। राष्ट्रवादिता ही राष्ट्रीयता है। हमको राष्ट्रवादी शिक्षा नीति मिली है। यह है अटल बिहारी वाजपेई विश्वविद्यालय बिलासपुर के कुलपति प्रो एडीएन वाजपेयी

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो संजय तिवारी ने कहा कि, भारतीय ज्ञान परंपरा का उपयोग हमें युवा पीढ़ी के लिए करना है। हमें इस बात का पता लगाना होगा कि, वे कौन से गुण थे, जिससे भारत को प्राचीन काल में विश्व गुरु कहा जाता था। उनको पहचाना होगा और उसे हमें अपनी पाठ्यचर्या में समाहित करना होगा। उन्होंने कहा कि, हमारे छात्र ही हमारा अंतिम लक्ष्य हैं और आज के छात्र डिजिटल युग के हैं। हम जो शिक्षण सामग्री बनाएं उसमें इस बात का ध्यान रखा जाए कि, उन्हें डिजिटल माध्यम से कैसे उपलब्ध कराया जा सकेगा। डॉ. तिवारी ने ध्यनाकर्षण करते हुए कहा कि, गीता में जीवन प्रबंधन के समस्त सूत्र समाहित है। हमें चिंतन का अपना देशज मॉडल विकसित करना होगा। हमें अपनी परंपराओं से जुड़ते हुए भी आधुनिक रहना होगा। उन्होंने कहा कि, भारत ने हमेशा सभ्यता पर जोर न देकर संस्कृति पर जोर दिया है। इसलिए हमारी संस्कृति ने बाहर की सभ्यताओं को भी आत्मसात कर लिया है। हम अकेले देश हैं जो विश्व कल्याण की बात करते हैं। उन्होंने उपस्थित प्राध्यापकों से कहा कि, हमें एक आदर्श पाठ्यचर्या का निर्माण करना है। जो पूरे देश के लिए आदर्श हो।

कार्यशाला में बीज वक्तव्य, प्रो चांद किरण सलूजा द्वारा दिया गया। इस दौरान तकनीकी सत्र की अध्यक्षता डॉ. सुषमा यादव द्वारा की गई। जिसमें उन्होंने उपस्थित प्राध्यापकों के अलग-अलग समूह बनाकर, उन्हें स्नातक स्तर के प्रथम प्रश्न पत्र "राजनीतिक सिद्धांत" की पाठ्यचर्या में भारतीय ज्ञान परंपरा के अनुरूप चिंतन एवं मनन कर क्या-क्या समाहित किया जा सकता है? क्या संशोधन की आवश्यकता है? आदि पर अपने सुझाव देने के लिए कहा। सभी समूहों ने उत्साह पूर्वक हिस्सा लिया और अपने-अपने सुझाव प्रस्तुत किये। जिस पर अध्यक्षीय भाषण देते हुए डॉ. सुषमा यादव ने कहा कि, हमें मूल ग्रंथ को पढ़ने का अभ्यास करना होगा। तभी हम अपने ग्रंथ पढ़ सकेंगे और पाश्चात्य ग्रंथ को भी पढ़ पाएंगे। तभी हम उनका सही मायने में विश्लेषण कर पाएंगे और उनकी समालोचना कर सकेंगे। उन्होंने कहा कि, हमें अपने मस्तिष्क को औपनिवेशिक प्रभाव से बाहर निकलना होगा। शिक्षा से हम अपेक्षा करते हैं कि, वह लोगों को नागरिक बनाएं, उनमें नागरिकता का बोध कराए। शिक्षा की गुणवत्ता में गिरावट भी एक राजनीतिक प्रश्न है। अंत में उन्होंने कहा कि, हमें भारतीय नजरिए से अपनी परिभाषाएं करनी होगी। भारत की मूल प्रकृति करुणा और संवेदनशीलता है। उन्होंने इस अवसर पर प्राध्यापकों के साथ राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की विशेषताओं पर भी प्रकाश डाला।

कार्यशाला के प्रथम दिवस में स्वागत एवं तकनीकी सत्र का मंच संचालन भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय की आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन केंद्र की डिप्टी डायरेक्टर डॉ. अनिता कौशल द्वारा किया गया। कार्यशाला के स्वागत सत्र के अंत में अतिथियों एवं सदन में उपस्थित विद्वानों का आभार प्रदर्शन विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ सुशील मंडेरिया द्वारा किया। प्रथम दिवस की कार्यशाला में भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय के समस्त विश्वविद्यालय परिवार एवं समस्त राजनीति शास्त्र के शिक्षाविदों ने बढ़ चढ़कर अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 मानस परिवर्तन का अभियान और वैचारिक स्वतंत्रता का आंदोलन है - डॉ. अतुल कोठरी

मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय में चल रही दो दिवसीय कार्यशाला का समापन 03/ जुलाई/2024 को हुआ। पूर्वाह्न से प्रारंभ तकनीकी सत्र तीन एवं चार सम्पन्न हुआ। जिसमे सभी शोधार्थियों द्वारा अपने- अपने शोध पत्रों का वचन किया एवं पाठ्यचर्या में परिवर्तन के लिए सुझाव भी दिए। तकनीकी सत्र का सफल संचालन प्रो. सुषमा यादव, सम कुलपति, हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय, महेंद्रगढ़ की अध्यक्षता में पूर्ण हुआ।अंतिम तकनीकी सत्र समाप्त होने के पश्चात् कार्यशाला के समापन सत्र आरंभ हुआ। इस अवसरपर मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. अतुल कोठारी, राष्ट्रीय सचिव, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली, विशिष्ठ अतिथि के रूप में प्रो. रविन्द्र कन्हारे, अध्यक्ष, प्रवेश एवं शुल्क विनियामक समिति, म. प्र., डॉ. एस. पी. गौतम, पूर्व कुलपति, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर, श्री अशोक कड़ेल, निदेशक, मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, भोपाल एवं प्रो. सुषमा यादव, सम कुलपति, हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय, महेंद्रगढ़ ने कार्यशाला के समापन सत्र में शिरकत की। समापन सत्र की अध्यक्षता मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. संजय तिवारी द्वारा की गई। साथ ही इस मोके पर कार्यशाला संयोजक के रूप में मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. सुशील मंडेरिया उपस्थित रहे। कार्यशाला के नोडल अधिकारी एवं विश्विद्यालय के अकादमिक समन्वय विभाग के निदेशक डॉ. उत्तम सिंह चौहान द्वारा सभी सत्रों का सम्मिलित प्रतिवेदन प्रस्तुत किया गया।इस अवसर पर समस्त राजनीति शास्त्र के शिक्षाविदों को प्रमाण पत्र भी वितरित किये गए।

समापन सत्र के विशिष्ट अतिथि श्री अशोक कड़ेल, निदेशक, मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, भोपाल ने अपने वक्तव्य में कहा कि, राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भारतीयज्ञान परंपरा मुख्य रूप से शामिल है। आजादी के बाद शिक्षा में जो भारतीयता का पुट आना चाहिए था, वह अपेक्षाकृत रूप से नहीं आ पाया। पिछले 75 वर्षों के इंतजार के बाद ऐसी शिक्षा नीति आई है, जो विद्यार्थियों को उनके विषय ज्ञान के साथ-साथ अपनी संस्कृति के ज्ञान से भी परिचय कराती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति को लागू करने में मध्य प्रदेश प्रथम राज्य रहा है और 2021 में हमने राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू कर दिया। इसके साथ ही उससे सम्बंधित किताबें भी लिखवाई गई हैं। श्री कड़ेल ने बताया कि, 18 विषयों तथा 7 आधार भूत विषयों को मध्य प्रदेश के 27 विश्वविद्यालयों को आवंटित कर उसमें भारत भारतीय ज्ञान परंपरा को जोड़ने का कार्य सौंपा गया है। यह हमारी 5 साल की कार्य योजना है। जिसमें पुस्तकों में भारतीय ज्ञान परंपरा को समाहित करने का प्रयास किया जा रहा है।

प्रो एस.पी. गौतम, पूर्व कुलपति, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर ने अपने उद्बोधन में कहा कि, भारतीय ज्ञान परंपरा की मूल विशेषता है-समग्रता। भारतीय परंपरा "मै" से बाहर है। उन्होंने रामायण और महाभारत के कई उदाहरण देकर भारतीय ज्ञान परंपरा के मूल्यों के बारे में विश्लेषण किया। प्रो. गौतम ने कहा कि, धर्म चक्र के आधार पर राजनीति करें। हमें यह मानना चाहिए कि, "मैं" पृथ्वी का पुत्र हूं। राष्ट्र सर्वोपरि है। कर्म- धर्म के आधार पर हो और धर्म-कर्म के आधार पर हो। विश्व और राष्ट्र में भेद नहीं करना चाहिए। कर्तव्य को विवेक के आधार पर करना ही राजनीति है। प्रो रविंद्र कन्हारे, अध्यक्ष, प्रवेश एवं शुल्क विनियामक समिति, म. प्र ने. अपने वचनों में कहा कि, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में संरचनात्मक बदलाव किया जा चुका है। शिक्षकों से आवाहन किया कि, पाठ्यचर्या में भारत केंद्रित, मूल्य आधारित भारतीय ज्ञान परंपरा को समाहित किया जाए। भारतीय शिक्षा आध्यात्मिकता और मूल्य आधारित रही है। हमें भारतीय ज्ञान परंपरा को पाठ्यचर्या में समाहित करते हुए, पाठ्य पुस्तकों में भी समाहित करना होगा।

डॉ. अतुल कोठारी,राष्ट्रीय सचिव, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नईं दिल्ली ने अपने उदबोधन में कहा कि, आज राजनीति शब्द सबसे नकारात्मक और खराब शब्द है। पहले ऐसा नहीं था। राज्य चलाने की नीति ही राजनीति है। देश की शिक्षा का स्वरूप उसे देश की संस्कृति, प्रकृति और प्रगति के अनुरूप होना चाहिए। उन्होंने कहा कि, शिक्षा में आध्यात्मिकता और राजनीति का समन्वय होना चाहिए। राजनीति को यदि आध्यात्मिक दृष्टि मिल जाएगी, तो सब कुछ ठीक हो जाएगा। नीति देशकाल, स्थिति और अपनी परिस्थिति के अनुरूप बनाना चाहिए। उन्होंने इस संबंध में श्री कृष्ण, कौटिल्य, शिवाजी महाराज और सरदार वल्लभ भाई पटेल के राजनीतिक कार्य और दर्शनों की चर्चा की। डॉ. कोठरी ने कहा कि, यह चारों भारतीय राजनीति के लिए आदर्श हैं। इन्होंने धर्म की स्थापना केलिए राजनीति की। हमें इनका अध्ययन करना चाहिए। उन्होंने इस संबंध में कहा कि, राष्ट्र देश और राज्य यह अलग-अलग शब्द है। राज्य एक राजनीतिक शब्द है, जबकि देश में राजनीति के साथ-साथ भौगोलिकता भी समाहित होती है और राष्ट्र में राजनीति, भौगोलिकता के साथ-साथ सांस्कृतिक आयाम भी शामिल होता है। उन्होंने कहा कि, एकात्म मानव दर्शन एक समग्रता की दृष्टि है। भारतीय ज्ञान परंपरा को आज की आवश्यकता एवं परिस्थिति से जोड़कर हमें पुस्तकों में समाहित करना चाहिए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 मानस परिवर्तन का अभियान है। पहले हमें स्वयं का मानस बदलना होगा, फिर दूसरों का मानस अपने आप बदल जाएगा। यह एक वैचारिक स्वतंत्रता का भी आंदोलन है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए, मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो संजय तिवारी ने कहा कि, आध्यात्मिकता और सांस्कृतिक ज्ञान का भंडार है-हमारी भारतीय ज्ञान परंपरा। उन्होंने इस संदर्भ में कई भारतीय वैज्ञानिकों की चर्चा की। डॉ. तिवारी ने कहा कि, भारतीय ज्ञान परंपरा के माध्यम से समाज में जागृति लाई जा सकती है।

कार्यशाला के अंतिम दिवस में तकनीकी एवं समापन सत्र का मंच संचालन भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय की वरिष्ठ सलाहकार डॉ. साधना सिंह बिसेन द्वारा किया गया। कार्यशाला के अंत में अतिथियों एवं सदन में उपस्थित विद्वानों का आभार प्रदर्शन विश्वविद्यालय के निदेशक डॉ. उत्तम सिंह चौहान द्वारा किया गया। कार्यशाला के समापन सत्र में भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय के समस्त विश्वविद्यालय परिवार एवं समस्त राजनीति शास्त्र के शिक्षाविदों इस अवसर पर बढ़चढ़कर अपनी उपस्थिति दी।

पीएमश्री कॉलेज का उदघाटन: सजीव प्रसारण
दिनांक: 14/07/24

मध्यप्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय भोपाल, (म.प्र.)
Madhya Pradesh Bhoj(Open) University, Bhopal (M.P)
(Accredited with Grade 'A' by NAAC)
(Established under the Act of 1991 by M.P. Legislative Assembly)

समस्त पत्र व्यवहार कुलसचिव मध्यप्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय के नाम से ही किया जावे न कि किसी अन्य पदाधिकारी के नाम से। संबंधित विषय पर यदि पूर्व में पत्र व्यवहार हुआ हो तो पत्र क्रमांक एवं दिनांक अवश्य लिखा जावे जिससे सुविधा हो।

पता : राजा भोज मार्ग, कोलार रोड, भोपाल–462016
दूरभाष : 0755–2492093
फेक्स : 0755–2424640
वेबसाइट : https://mpbou.edu.in/
ईमेल : registraroffice.mpbou@gmail.com

क्रमांक /1803/स्था./मप्रभोमुविवि/2024 भोपाल, दिनांक 11/07/2024

//आदेश//

कार्यालय आयुक्त, उच्च शिक्षा; मध्यप्रदेश का पत्र दिनांक 10.07.2024 के द्वारा प्राप्त निर्देशानुसार में मान. केन्द्रीय गृह मंत्रीजी के मुख्य आतिथ्य एवं मान. मुख्यमंत्रीजी म.प्र. शासन की अध्यक्षता में 55 ''प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस'' का उद्घाटन समारोह दिनांक 14.07.2024 को दोपहर 02:25 से 03:26 बजे तक अटल बिहारी वाजपेयी शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, इंदौर में आयोजित है। उद्घाटन समारोह का सीधा प्रसारण दूरदर्शन, फेसबुक लाईव, ट्वीटर, यू–ट्यूब इत्यादि के माध्यम से किया जाना है।

उद्घाटन समारोह का सीधा प्रसारण मध्यप्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय के कक्ष क्रमांक–25 में किया जाएगा जिसमें समस्त विद्यार्थियों, शिक्षकों और कर्मचारियों की उपस्थिति अनिवार्य है।

आदेशानुसार
कुलसचिव

पृष्ठांकन क्रमांक /1804/स्था./मप्रभोमुविवि/2024 भोपाल, दिनांक 11/07/2024
प्रतिलिपि:

1. समस्त विद्यार्थियों, शिक्षकों और कर्मचारियों की ओर सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु।
2. निदेशक, विद्यार्थी सहायता विभाग मप्रभोमुविवि, भोपाल सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु।
3. प्रभारी बी.एड. (विशेष शिक्षा) विभाग की ओर इस आशय से कि उक्त कार्यक्रम में विद्यार्थियों की उपस्थिति सुनिश्चित की जाए।
4. निज सहायक के माध्यम से मा. कुलपति जी/कुलसचिव म. प्र. भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय, भोपाल।

सहा. कुलसचिव

World Youth Skills Day 2024

मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय में 15/07/2024 को "विश्व युवा कौशल दिवस" के अवसर पर भोज विश्वविद्यालय में इनक्यूबेशन सेंटर द्वारा एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. राजेश खंबायत, प्रोफेसर, एन.आई.टी.टी.टी.आर, भोपाल उपस्थित रहे। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में श्रेयस पांडे, संस्थापक, रिचीस लाइफ स्टाइल, भोपाल ने शिरकत की। इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. संजय तिवारी, कुलपति, मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय ने की। साथ ही संयोजक के रूप में डॉ सुशील मंडेरिया, कुलसचिव, मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय उपस्थित रहे। कार्यक्रम की रूपरेखा सह संयोजक मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय के निदेशक एवं इनक्यूबेशन सेंटर के इंचार्ज डॉ. किशोर जॉन ने विशेष रूप से "विश्व युवा कौशल दिवस" को ध्यान में रखते हुए तैयार की। जिससे भोज विश्वविद्यालय में कौशल विकास की शिक्षा ले रहे विद्यार्थियों को व्यापार के नए आयामों से अवगत कराया जा सके। कार्यक्रम का आयोजन भोज विश्वविद्यालय के सभागार कक्ष में संपन्न हुआ।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता,श्रेयस पांडे ने अपनी कंपनी एवं उसके विकास के संबंध में बताते हुए कहा कि, कि बांस के बने हुए टॉवल, कॉटन के स्थान पर कहीं अधिक उपयोगी है। क्योंकि इसमें बैक्टीरिया रोधी तथा फफूंद विरोधी गुण पाए जाते हैं। आजकल लोगों का ध्यान बांस के कपड़े की तरफ अधिक जा रहा है, क्योंकि विभिन्न प्रकार की अनुसंधान में यह पाया गया है कि, कॉटन के स्थान पर बांस का कपड़ा ज्यादा अच्छा है। श्री पांडे ने अपने विभिन्न उत्पादों के संबंध में अवगत कराया और कहा कि, हम अपने उत्पादों के साथ में सीड पेपर मुफ्त में देते हैं। जिसको हमारे ग्राहक अपने स्थान पर जाकर उगा सकते हैं। हमारी पैकेजिंग पूरी तरह प्लास्टिक मुक्त होती है। इस अवसर पर श्रेयस पांडे ने सभागार में उपस्थित लोगों के प्रश्नों के संतुष्ट उत्तर भी दिए।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि, डॉ. राजेश खंबायत ने कहा कि, आज हम विश्व युवा कौशल दिवस मना रहे हैं। जिसका थीम है "शांति और विकास"। इस दिवस को मनाने का उद्देश्य है, हमारे युवाओं को कौशल युक्त करना। आज विश्व की सबसे बड़ी समस्या है आर्थिक असमानता। भारत में लगभग 10% लोगों के पास में 58% संसाधन है। जबकि 50% लोगों के पास केवल 15% के संसाधन ही हैं। पर्यावरण की समस्या भी एक सबसे बड़ी समस्या है। 2024 का वर्ष सबसे गर्म वर्ष रहा है। विश्व में कई प्रकार के युद्ध चल रहे हैं।हमारे सामने युवाओं के भविष्य की सबसे बड़ी चिंता है। विश्व में युवाओं की संख्या लगातार बढ़ रही है जो कि, आज लगभग विश्व की जनसंख्या का 42% युवा है और 2030 तक विश्व में यह संख्या 50% तक हो जाएगी। इनमें से बहुत सारे युवा युद्ध ग्रस्त क्षेत्र में प्रभावित हो रहे हैं। युवाओं को कैसे रोजगार के लिए तैयार किया जाए ? कैसे उनमें कौशल विकास किया जाए ? यह आज की सबसे बड़ी समस्या है। उन्होंने कहा कि, प्रौढ़ लोगों की अपेक्षा युवाओं की बेरोजगारी तीन गुना ज्यादा है। युवाओं को जो रोजगार मिल भी रहे हैं, वह बहुत ही कम पैसे वाले हैं। डॉ. खंबायत ने कहा कि, भारत सरकार के सामने युवा और कौशल विकास एक महत्वपूर्ण एजेंडा है। पारंपरिक शिक्षा कार्यक्रम के अलावा हमें रोजगार लायक कौशल प्रदान करने वाले नए कार्यक्रम बनाने होंगे। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में कौशल विकास पर अधिक जोर दिया गया है। हमें समग्र और बहु विषयक शिक्षा की आवश्यकता है। जो अपने देश और समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप अपने नागरिकों को तैयार कर सके।

उद्योगों में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और हाइपर ऑटोमेशन तेजी से बढ़ रहा है। हमें अपने युवाओं को इन कौशलों से युक्त करना होगा। युवाओं में कौशल विकास करने के लिए शिक्षकों की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण है। हमें नए जमाने के युवाओं के अनुसार अपने आप को तैयार करना होगा तथा खुद को नए कौशल से युक्त करना होगा उन्होंने कहा कि, युवाओं के लिए योजना बनाते समय हमें युवाओं की भागीदारी और उनका पक्ष को भी सुनकर महत्व देना चाहिए।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे हैं मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो संजय तिवारी ने कहा कि, अगर हमें भारत की युवा जनसंख्या का उपयोग करना है तो, उनको हमें कुशल बनाना होगा। भारत में लगभग 83% युवा बेरोजगार हैं और इनमें से 50% युवा तो रोजगार के लायक कौशल भी नहीं रखते हैं। उन्होंने इस अवसर पर सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल- 2030 की भी चर्चा की। डॉ. तिवारी ने इस बात पर चिंता व्यक्त की कि, हमारी शिक्षा से निकले हुए साक्षर व्यक्तियों में शिक्षा के संस्कार की कमी है। उन्होंने कहा कि, हमें एक बार कौशल प्राप्त करके ही नहीं रुकना है, बल्कि हमें अपने आप को उच्च कुशल तथा पुनः कौशल से युक्त भी होना होगा। जिससे हम समय के अनुसार बदलते परिवेश में अपने आप को आगे रख सकें। भविष्य में अपेक्षाकृत कम कौशल वाली नौकरियां तकनीक के माध्यम से बदल जाएगी और इससे बहुत सारी नौकरियां खत्म होगी। उन्होंने कहा कि, हमें अपने कार्य को उत्साह से करना चाहिए और उसको आनंदपूर्वक करना चाहिए। आने वाला समय आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और सेमीकंडक्टर के क्षेत्र में विकास का है। उन्होंने युवाओं को विशेष रूप से अपना समय प्रबंधन करने का आवाहन किया। डॉ. तिवारी ने कहा काबिल बनो तो कामयाबी अपने आप आपके पीछे आएगी। उन्होंने आशा व्यक्त की कि, हमारी युवा पीढ़ी विकसित भारत के सपने को पूरा करेगी।

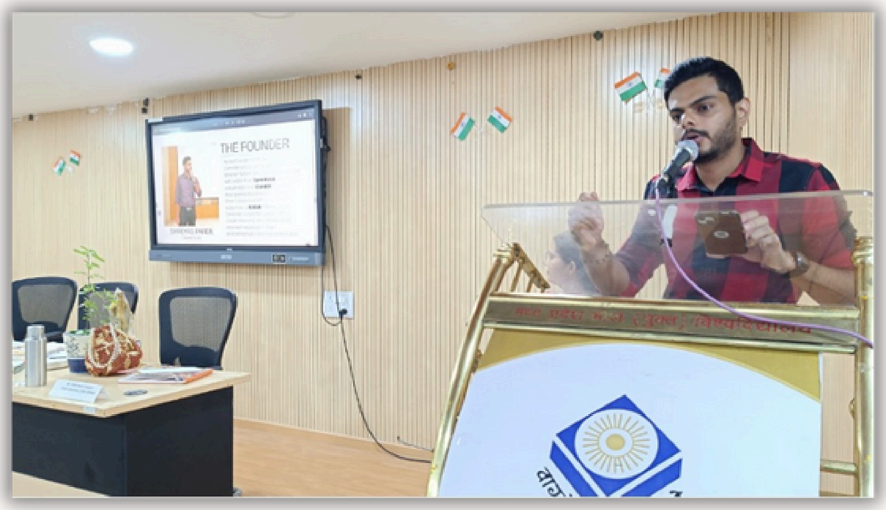

अंत में धन्यवाद व्यक्त करने से पूर्व विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ सुशील मंडेरिया ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि, विश्वविद्यालय रिचीस लाइफ स्टाइलके साथ मिलकर कौशल विकास के कार्यक्रम चलाएगी। जिससे विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों का भला होगा। उन्होंने कहा कि, हमें वैश्विक ब्रांड इस्तेमाल करने की बजाय, भारतीय उत्पादों को ज्यादा से ज्यादा इस्तेमाल करना चाहिए और हमें स्वदेशी पर सबसे अधिक जोर देना होगा।

कार्यक्रम में मंच संचालन मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय की सलाहकार डॉ. निधि रावल गौतम द्वारा किया गया। कार्यक्रम के अंत में धन्यवाद व्यक्त मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय के कुलसचिव एवं कार्यक्रम के संयोजक डॉ सुशील मंडेरिया द्वारा किया गया। इस अवसर पर भोज (मुक्त) विश्वविद्यालयके समस्त शिक्षक,अधिकारी, कर्मचारीगण एवं विश्वविद्यालय में कौशल विकास की शिक्षा ले रहे समस्त विद्यार्थी भी उपस्थित रहे।

स्वास्थ्य परीक्षण शिविर दिनांक:25/7/2024

मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय में दिनांक 25 जुलाई 2024 को स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर समस्त भोज परिवार के अधिकारियों, शिक्षकों एवं कर्मचारियों का स्वास्थ्य परीक्षण किया गया। स्वास्थ्य शिविर में मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. ए.के. चौधरी, हेल्थ स्पेशलिस्ट, एल. एन. मेडिकल कॉलेज और जे.के. हॉस्पिटल, भोपाल उपस्थित थे। इस मौके पर डॉ. ए.के. चौधरी अपनी पूरी टीम के साथ भोज विश्वविद्यालय में उपस्थित थे। 6 डॉक्टर और दो टेक्नीशियन की टीम में डॉ. कृति शर्मा मेडिसिन, डॉ. सलमान उल्लाह खान, कार्डियक, डॉ संगीता सीनियर, डाइटिशियन, डॉ. साक्षी तिवारी, जूनियर डाइटिशियन, डॉ. पूर्वा गुप्ता, मेडिसिन साथ ही टेक्नीशियन टीम में डॉ. पूजा अंभोरे, लैब टेक्नीशन, और श्री अजय मौरे शामिल थे। स्वास्थ्य शिविर के खास अवसर पर एल एन मेडिकल कॉलेज के जनरल मैनेजर डॉ श्याम देव यादव भी उपस्थित थे। स्वास्थ्य शिविर कार्यक्रम की अध्यक्षता मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो. डॉ. संजय तिवारी द्वारा की गई। कार्यक्रम के आयोजन एवं विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. सुशील मंडेरिया भी मौके पर मौजूद रहे। स्वास्थ्य शिविर का आयोजन विश्वविद्यालय के आंतरिक गुणवत्ता एवं आश्वासन केंद्र की उप निदेशक एवं स्वास्थ्य शिविर की नोडल ऑफिसर डॉ. अनीता कौशल द्वारा कराया गया। इस स्वास्थ्य शिविर में विश्वविद्यालय परिवार के लगभग 150 से अधिक लोगों ने अपने स्वास्थ्य का परीक्षण कराया। जिसमें सबसे अधिक ब्लड प्रेशर, शुगर एवं अन्य जरूरी ब्लड टेस्ट करवाए गए।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एवं भोज विश्वविद्यालय में मेडिकल कंसलटेंट डॉ. ए. के.चौधरी ने अपने उद्बोधन में कहा कि, वर्तमान में वर्षा ऋतु का मौसम है ऐसे में हमारे आसपास छोटे बड़े विभिन्न जगह पर पानी भरा रह जाने के कारण उसमें कई प्रकार के मच्छर और कीड़े उत्पन्न हो जाते हैं। ऐसी स्थिति में हमें अपने आसपास खास कर वर्षा ऋतु में साफ सफाई का अत्यंत ध्यान रखना चाहिए। अगर हमारे आसपास कहीं भी सकोरे, टंकी, बाल्टी, छोटे डब्बे, ढक्कन आदि में कई दिनों से लगातार दूषित पानी जमा हुआ है तो उसे तत्परता से फेंककर साफ एवं स्वच्छ वातावरण बनाए रखना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि, केवल डॉक्टर को ही नहीं वरन् आम नागरिकों को भी प्राथमिक उपचार के गुर आना जरूरी है। डॉ. चौधरी ने अनट्रीटेड और ट्रीटेड दोनों ही प्रकार के बुखार के संबंध में बताया कि, अगर हमारा बुखार 7 दिन में ठीक नहीं होता है तो, हमें विशेष उपचार की आवश्यकता होती है। उसको अनदेखा करना उसमें ढील डालना सही नहीं होता क्योंकि, अगर हम 7 दिन से अधिक बुखार में हो तो वह निमोनिया या अन्य बड़ी समस्या भी हो सकती है। आज के वर्तमान समय में अनिद्रा व्यक्ति के जीवन में बड़ी समस्या है। निद्रा पूर्ण न होने से सबसे अधिक ब्लड प्रेशर, शुगर एवं विशेष रूप से मेंटल स्ट्रेस का लेवल बढ़ता है और इससे हमारा स्वास्थ्य सुधरने की बजाए और बिगड़ता चला जाता है। समय पर खाना, समय पर उठाना, समय से स्वास्थ्य का ध्यान रखना ही स्वच्छ और स्वस्थ जीवन का गुण है।

विश्वविद्यालय में उपस्थित डॉक्टर की टीम में से मेडिसिन में स्पेशलाइजेशन कर रही डॉ कृति शर्मा शरीर को स्वस्थ रखने एवं दिनचर्या में बदलाव लाने के कुछ सुझाव देते हुए कहा कि, हम स्वयं ही अपने अंदर पनप रही बीमारियों के जानकार बन सकते हैं जैसे बार-बार बाथरूम जाना सोते समय बीच में कई बार नींद में उठकर बाथरूम जाना जैसी समस्याएं हमें इशारा देती है कि यह शुगर के लक्षण हो सकते हैं। ठीक ऐसे ही सीने में दर्द, उल्टे हाथ के कंधे में दर्द, पीठ में दर्द जैसे लक्षण हमें इंगत करते हैं कि यह हार्ट अटैक से संबंधित हो सकता है। उन्होंने कहा कि, हमें अपने खान पान में भी बदलाव लाना जरूरी है। लिपिड प्रोफाइल का टेस्ट समय-समय पर करते रहना आज के समय में अपने स्वास्थ्य के लिए एक अच्छा निर्णय है।

जे के हॉस्पिटल की डाइटिशियन डॉ. संगीता एवं डॉ. पूर्वा ने सभागार में उपस्थित सभी को स्वस्थ स्वास्थ्य के लिए खान-पान में रख रखाव एवं बदलाव करने की सुझाव दिए। डॉ. संगीता ने इस बात पर जोर दिया कि हमें एक महीने में प्रति व्यक्ति 750 ml तेल खर्च करना चाहिए। डॉ संगीता ने कहा कि, हमारी बॉडी में फाइबर की कमी होने से कई प्रकार की समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं उनसे बचने का सही उपाय है कि, हम अपनी दिनचर्या में फाइबर की मात्रा को अधिक जोड़े और उसका सेवन करें। रात को सोने से लेकर सुबह उठने के बीच में एक लंबा अंतराल होता है इस हिसाब से सुबह का नाश्ता लेना स्वस्थ शरीर के लिए आवश्यक है। सुबह टहलने और हेल्दी फूड लेने से हमारा स्वास्थ्य सही रहता है रक्त संचार भी अच्छा रहता है। डॉ. संगीता ने बताया कि, हमें अपनी डाइट में लगातार रोटी का सेवन करने की बजाय, उसे मिलेट से रिप्लेस करना चाहिए क्योंकि रोटी में कार्बोहाइड्रेट की मात्रा अधिक होती है और ज्यादा कार्बोहाइड्रेट लेने से बॉडी में फैट भी बढ़ता है।

डॉ. सलमान खान ने आम व्यक्तियों में, कम उम्र में अचानक आ रहे स्ट्रोक एवं हार्ट अटैक के लक्षणों से अवगत कराते हुए विभिन्न लाभकारी उपाय समझाते हुए इससे बचाव के विभिन्न तरीके समझाए।

कार्यक्रम के अध्यक्षता कर रहे विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. संजय तिवारी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि, डॉक्टरों की सलाह जीवन में हमें स्वस्थ रखने के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। उन्होंने उपस्थित समस्त डॉक्टरों की टीम को विश्वविद्यालय की ओर से धन्यवाद किया। डॉ. तिवारी ने मुख्य अतिथि डॉ.ए.के.चौधरी के लिए कहा कि, डॉ.चौधरी हमारे भोज परिवार के बहुत ही अहम सदस्य हैं। इन्होंने नेक दौर के दौरान बहुत ही सरल और सहजता के साथ हमारा साथ दिया। साथ ही नेक दौरे पर आए सभी अतिथियों का विशेष स्वास्थ्य परीक्षण कर उन्हें समय पर जांच रिपोर्ट भी उपलब्ध करवाई। डॉ. तिवारी ने कहा कि, वर्तमान समय में हमारी दिनचर्या से हम आए दिन नई समस्याओं का शिकार होते जा रहे हैं। इससे बचने के लिए हमें समय-समय पर अपना स्वास्थ्य परीक्षण कराते रहना आवश्यक है। हम स्वस्थ होंगे तभी देश स्वस्थ होगा।

राष्ट्रीय हिंदी विज्ञान सम्मेलन **2024**

मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय में दिनांक 31 जुलाई 2024 को राष्ट्रीय हिंदी विज्ञान सम्मेलन 2024 के अंतर्गत एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का विषय था "अमृत काल में राष्ट्रीय वैज्ञानिक चेतना का उन्नयन" के अंतर्गत "समयानुकूल कृषि प्रौद्योगिकी"। विश्वविद्यालय में आयोजित इस कार्यक्रम में विज्ञान और कृषि के क्षेत्र के अनेक महारथियों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. प्रभा शंकर शुक्ल, कुलपति, नॉर्थ ईस्ट हिल यूनिवर्सिटी, शिलांग उपस्थित रहे। इस अवसर पर मुख्य वक्ता एवं सारस्वत अतिथि के रूप में डॉ. एन. के.. गुप्ता, निदेशक, शिक्षा एस.के.एन. कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर जयपुर (राजस्थान) उपस्थित थे। विशिष्ट अतिथियों के रूप में श्री मनोज पटेरिया निदेशक राष्ट्रीय विज्ञान संचार सूचना संसाधन संस्थान, डॉ. प्रवीण रामदास, सह संगठन मंत्री विज्ञान भारती, नई दिल्ली, और श्री संजय सिंह कौरव, प्रांतीय सचिव, विज्ञान भारती मध्य भारत प्रांत, छत्तीसगढ़ शामिल थे। इस मौके पर कार्यक्रम की अध्यक्षता मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो. संजय तिवारी द्वारा की गई साथ ही कार्यक्रम के संयोजक एवं विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. सुशील मंडेरिया भी कार्यक्रम में मौजूद रहे। विश्वविद्यालय में आयोजित इस कार्यक्रम में सभी उपस्थित विशिष्ट अतिथियों, विद्वानों ने कृषि के क्षेत्र में विज्ञान की उपलब्धियां एवं उपयोगिता को विस्तार पूर्वक अपने उद्बोधन में प्रस्तुत किया।

सर्वप्रथम श्री मनोज पटेरिया ने कहा कि, वैज्ञानिक चेतना में कृषि पर पतंजलि विश्वविद्यालय बहुत गहरी खोज कर रहा है। इसकी सूचना मुझे कुछ ही समय पूर्व मिली है और जल्द ही इसका परिणाम भी हमें सफलता के रूप में ही प्राप्त होगा ऐसी उम्मीद है। श्री पटेरिया ने बताया कि, हमने बचपन में एक कविता सुनी थी उसमें एक लाइन थी "बुंदेले हरबोलों के मुंह हमने सुनी कहानी थी" इस वाक्य का अर्थ था कि हमारे राज्य में, नगर में जो भी जैसा भी माहौल और मौसम या कृषि की भी अन्य जानकारियां बुंदेले हरबोले बटोर कर ऊंचाई में जाकर पूरे नगर को संबोधित करते हुए सूचना प्रसारण करते थे। इसमें विशेष कर कृषि की उत्पादकता एवं उत्पादन में विशेष उपयोगी मौसम का हाल अपने स्तर से बात कर सभी को जानकारी प्रदान करते थे। उन्होंने यह यह भी कहा कि आधुनिक कृषि पर बहुत अधिक कार्य हुए हैं परंतु एक विशेष पायदान तक पहुंचाने के लिए हमें और प्रयास करना होगा। हम जैविक खेती से प्राकृतिक खेती की ओर बढ़ रहे हैं जिसे वर्तमान भाषा में ऑर्गेनिक फार्मिंग का नाम दिया गया है। श्री पटेरिया ने यह भी स्पष्ट किया कि "लैब टू लैंड" के साथ-साथ हमें आज के समय को ध्यान में रखतेहुए "लैंड टू लैब" पर विशेष ध्यान देना चाहिए। किसी भी खेती को जब हम प्रायोगिक अवस्था में लेंगे तो आवश्यक बदलाव आएगा और उसकी गुणवत्ता भीअच्छी होगी। उन्होंने विभिन्न उदाहरण जिसमें भाखरा नांगल डैम, प्राचीन समय में वैज्ञानिक दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए अनाज के रख रखाव में नीम एवं दिए के इस्तेमाल जैसे कुछ अन्य महत्वपूर्ण कृषि क्षेत्र के उदाहरण देकर अपने विचार प्रस्तुत किया।

बीज वक्ता के रूप में उपस्थित डॉ. एन. के. गुप्ता ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि, विषम परिस्थितियों में कृषि कैसे की जाती है इसका उदाहरण भारतीय किसान है। भारतीय किसानों ने कोरोना के दौरान भी पूरे देश में अनाज की कमी नहीं आने दी। जब पूरा देश कोरोना की मार झेल रहा था और घर पर बैठ के विभिन्न प्रकार के व्यंजनों का सेवन कर रहा था तब हमारे भारतीय किसान अपने-अपने खेतों में पसीना बहा कर हमारे लिए अनाज की बुवाई और कटाई में जुटे हुए थे। उन्होंने राजस्थान के किसानों के जीवन यापन का उदाहरण देकर कहा कि, राजस्थान के किसान कभी भी सिर्फ कृषि पर निर्भर नहीं होते हैं। राजस्थान में वन्यजीवों की संख्या बहुत अधिक है। राजस्थानी किसान वन्यजीवों के लिए भी अपना समय व्यतीत करते हैं। हमारे विश्वविद्यालय के पास 35000 करोड़ लीटर वॉटर स्टोरेज फैसिलिटी उपलब्ध है। राजस्थान में आज भी कृषि में बहुत कम पेस्टिसाइड का उपयोग किया जाता है। क्योंकि भारत प्राचीन काल से ही कृषि प्रधान देश रहा है और इसी के चलते भारत को सोने की चिड़िया भी कहा जाता रहा है। आज के किसान, बढ़ती आबादी को ध्यान में रखते हुए और अधिक मेहनत के साथ भारत में अनाज उत्पादकता में सफल हुए हैं। इतना ही नहीं आज भारत के पास इतना अनाज है कि वह चाहे तो अपने देश की जनसंख्या के साथ-साथ दूसरे देश को भी अनाज उपलब्ध कराने में सक्षम है।

संजय सिंह कौरव ने अपनी बात रखते हुए कहा कि, हम उस देश में रहते हैं, जहां किसान हित की बातें भी किसान आसानी से समझ नहीं पाते। यह उस अंग्रेजी का दुष्प्रभाव है। मेरा मानना है कि, विज्ञान मातृभाषा में उपलब्ध होना चाहिए। कृषि के क्षेत्र में मातृभाषा बहुत उपयोगी होती है। हम जिस भी राज्य में देश में कृषि के क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं हमें वहां की मातृभाषा से परिचित होना एवं बोलना आना आवश्यक है। मातृभाषा में हृदय की बात हृदय तक आसानी से पहुंचती है। समाज की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए लैंड टू लैब का कॉन्सेप्ट बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि इसी से हम लैब में समाज की आवश्यकताओं को वैज्ञानिकों के माध्यम से पूर्ण करने में सफल हो पाएंगे। उन्होंने कहा कि, किसान की समस्याओं का निवारण करना ही विज्ञान का लक्ष्य है। अक्सर शोध पहले होता है और बाद में प्रौद्योगिकी तय होती है। वर्तमान युग में अधिकतर किसानों के बच्चे अपने माता-पिता, अपने बुजुर्गों की तरह खेती करना पसंद नहीं करते। वे अधिकांशत:किसी अन्य क्षेत्र में अपना भविष्य निर्धारित करना पसंद करते हैं। हमारे हृदय की संवेदना हमारी मातृभाषा में होती है। इसीलिए भारतीय हिंदी विज्ञान का कार्यक्रम भोपाल में ही आयोजित किया गया और यहां सिर्फ एक बार नहीं पिछले कई बार से यह कार्यक्रम हृदय स्थल भोपाल में आयोजित किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि, भौगोलिक दृष्टि से भारत में सर्वाधिक जमीन खेती के लिए उपलब्ध है। उन्होंने सरकार की कृषि से जुड़ी विभिन्न योजनाओं की जानकारी देते हुए कहा कि, वर्तमान समय में किसानों को जैविक छिड़काव के लिए ड्रोन को उपयोग में लाने के लिए शिक्षित करना होगा और साथ ही ऐसे ही कुछ बड़े कदम कृषि के क्षेत्र में उपलब्धता के लिए उठाने होंगे।

प्रवीण रामदास ने अपने वक्तव्य में कहा कि, स्वदेशी विज्ञान मतलब भारत का विज्ञान और भारत के लिए विज्ञान। आधुनिक विज्ञान को भारत के लिए काम में लाना ही भारत के लिए विज्ञान है। हर देश अपनी मातृभाषा में पुरस्कृत होते हैं। विज्ञान की शिक्षा मातृभाषा में बहुत महत्वपूर्ण है। साइंस कम्युनिकेशन का एक रूल है कि इंडिया में अगर कोई प्रयोगशाला में काम करता है तो हिंदी आना महत्वपूर्ण है। हमारे मध्य प्रदेश में जो पुराने किसानों ने कृषि के क्षेत्र में अपना योगदान दिया है वह हमें नहीं भूलना चाहिए। हमें इस बात को भी ध्यान रखना चाहिए कि हमारा देश कृषि प्रधान देश रहा है।

मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित डॉ. प्रभा शंकर शुक्ला ने अपने उद्बोधन में कहा कि, आज की युवा पीढ़ी खेतों में काम नहीं करना चाहती और हम यह सोचते हैं कि 25 वर्षों बाद हमारा देश कैसा होगा, 200 वर्षों बाद हमारा देश कैसा बनेगा कृषि के क्षेत्र में हम क्या तरक्की कर पाएंगे यह हमने अभी से सोचना शुरू कर दिया है। नालंदा जैसे कई अन्य विश्वविद्यालय हमारे देश के अभिन्न अंग रहे हैं। जब भारत देश गुलाम था तो भी वह किसी कमी के चलते ही गुलाम हुआ और और जब देश आजाद हुआ तो वह भी हमारे देश के कुछ मजबूत और प्रतिभाशाली स्वतंत्रता सेनानियों की मदद से 1947 में आजाद हुआ। भारत कल भी कृषि प्रधानदेश था और सोने की चिड़िया कहलाता था और आज भी भारत कृषि प्रधान देश है। फिर भी गुलामी के समय से आजादी के कुछ समय बाद तक भारत के लोगों को लाल गेहूं जैसे अनाज का सेवन करना मजबूरी थी। उस समय विदेश से अनाज आयात करना हमारी मजबूरी का ही एक हिस्सा था वह लाल गेहूं जो विदेश में सूअर खाया करते थे वह भारत में यहां जीवित रहने के लिए हम भारतीयों ने खाया है और बीच में एक दौर ऐसा भी आया था जब अमेरिका के राष्ट्रपति ने कहा कि, हम आपको और अनाज उपलब्ध नहीं कराएंगे।

भारत में कृषि के क्षेत्र में उत्तरो उत्तर तरक्की हमने 1970 के बाद की और उसे दौर से अब तक भारत में 48 मिलियनकृषि भूमि में वृद्धि हुई। वह एक ऐसा दौर था जब भारत के प्रधानमंत्री दूसरे देश से भारत में जीवित रहने हेतु अनाज आयात करने के लिए पुरजोर कोशिश करते थे और एक आज का समय ऐसा है जब हम गर्व से बोलते हैं कि हमारे पास वर्तमान में इतना अनाज है कि, हम भारत की जनसंख्या के साथ-साथ कई अन्य देशों को भोजन करा सकते हैं। वर्तमान समय में पूरे देश में कृषि से तीन लाख टन अनाज हम हर वर्ष उत्पन्न कर रहे हैं। उन्होंने ऑर्गेनिक फार्मिंग पर बात करते हुए कहा कि, NEP ने देश में ऐसा कहा है कि, रीजनल लैंग्वेज में साहित्य को विकसित करें। ऐसा करने से हमारे देश की मातृभाषा हिंदी भी विकसित होगी। साथ ही विदेशी भाषा को भी प्राथमिकता दिए जाने को कहा जिससे सभी देश क्षेत्र में एवं हर जगह कृषि के क्षेत्र में विकास करना आसान होगा।

डॉ शुक्ला ने स्वयं विभिन्न भाषाओं में "आपका स्वागत है" वाक्य को बोलकर सभी को चकित कर दिया। उन्होंने कहा कि, हमें गर्व है नालंदा विश्वविद्यालय में आजभी 11 देश के लोग पढ़ रहे हैं। उन्होंने चीन में हर दिन हो रही नई खोज की चर्चा करते हुए कहा कि वह ऐसा देश है जो स्वयं खोज करके अपने ही देश के लोगों पर प्रयोग करते हैं। 1990 से भारत ने 6 गुना अनाज के प्रोडक्शन में बढ़ोतरी की है। हमें ऑर्गेनिक फार्मिंग को प्राथमिकता देनी चाहिए और अधिक अनाज बढ़ोतरी के लिए हो रहे पेस्टिसाइड और केमिकल का उपयोग कम करने के लिए प्रयासरत रहना चाहिए। सरकार का एक अनुमानित आंकड़ा है कि 2047 तक देश की जनसंख्या लगभग 170 करोड़ से ऊपर होगी ऐसे में हम देश के लोगों को भोजन उपलब्ध कराने में उस समय तक इतनी उत्पादकता के साथ सक्षम हो यह जरूरी नहीं है इस हेतु हमें अभी से देश में कृषि और ऑर्गेनिक फार्मिंग को बढ़ावा देते हुए भोजन के उत्पादकता बढ़ाने की आवश्यकता है।

2047 तक जनसंख्या को ध्यान में रखते हुए लगभग 100 मिलियन टन भोजन की आवश्यकता होगी इसे हेतु हमें अभी से प्रयासरत होना होगा। पर्याप्त मात्रा में अन्य उत्पादन या कृषि को बढ़ाने के लिए अनाज के साथ-साथ पानी की भी बहुत बड़ी मात्रा में आवश्यकता होती है। विश्व में इकोनॉमी की दृष्टि से भारत पांचवें स्थान पर है। दूध के उत्पादन में हम पहले स्थान पर हैं। अनाज के उत्पादन में हम दूसरे स्थान पर हैं। दिन प्रतिदिन मौसम में आ रहे बदलाव के चलते हैं हमारे देश के किसानों को कृषि में विभिन्न प्रकार की बाधाओं का भी सामना करना पड़ रहा है। हमें गर्व है कि हमारे पास ज्ञानवान पूर्ण युवा इस देश में मौजूद हैं। उन्होंने क्रोनोबायोलॉजी पर ध्यान आकर्षित करते हुए साइंटिफिक दृष्टि से हमारे जीवन पूरे बदलाव पर प्रकाश डाला। डॉ प्रभा शंकर ने कहा कि, वर्तमान में युवा पीढ़ी देर में सोना देर तक जागना सुबह देर तक सोते रहना जैसी दिनचर्या में ढली हुई है और यहां एक प्रकार से हम अपने स्वयं की क्रोनोलॉजी के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं। हमें अपनी क्रोनो बायोलॉजी को सुधारने के लिए स्वयं दृष्टिबद्ध होना होगा। अपने जीवन और अपने दिनचर्या में बदलाव लाकर ही हम अपना क्रोनो बायोलॉजिकल सिस्टम सुधार पाएंगे। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि, हमें फार्मर प्रोड्यूसिंग क्षेत्र में काम करना होगा। हमें नेचुरल फार्मिंग के माध्यम से दलहन तिलहन आदि फसलें लगाने की जरूरत है।

उन्होंने पोस्ट हार्वेस्टिंग को भी अपने वक्तव्य में शुमार करते हुए कहा कि एक और जहां कृषि से हम अनाज उत्पादन कर रहे हैं वही उसके समीप में उसकी क्लीनिंग और पैकेजिंग पर भी ध्यान देने की और काम करने की आवश्यकता है। अच्छी क्वालिटी का अनाज अच्छी पैकिंग के साथ उपलब्ध कराना आज के समय की मांग है। उन्होंने बताया कि पूरे भारत में फार्मिंग पर नजर रखने का काम FPO करता है। उन्होंने अपने वक्तव्य में कार्बन के क्षेत्र में भी प्रकाश डालते हुए कहा कि कार्बन ट्रेडिंग के क्षेत्र में हमारे किसानों को ट्रेनिंग की आवश्यकता है। कार्बन ट्रेडिंग करके ही हम देश में कितना ऑक्सीजन बचा है विभिन्न क्षेत्रों से जानकारियां प्राप्त कर सकते हैं। हमें सिर्फ कृषि से अनाज ही नहीं पैदा करना है। हमें इसके साथ-साथ देश में अनाज की बिक्री अच्छे से अच्छी हो इस पर भी ध्यान देना आवश्यक है इस हेतु इसकी पैकेजिंग एक बहुत बड़ा पहलू है। हमारे देश में 18% जीडीपी हमें कृषि से मिलती है।

भोज विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो. संजय तिवारी ने अपने उद्बोधन में कहा कि, ICER ने 187 ऐप लॉन्च किए हैं। वर्तमान में कृषि के क्षेत्र में भारत काफी हद तक आत्मनिर्भर है। उन्होंने प्राचीन समय में खाद्यान्न के क्षेत्र में भारत में पर्याप्त अनाज ना होने पर हो रही समस्याओं का जिक्र करते हुए कहा कि हमें उस समय अपने देश की जनसंख्या को जीवित रखने के लिए बाहर के अन्य देशों से अनाज आयात करना पड़ता था। कोलकाता एवं भारत के कुछ अन्य राज्यों में जब जरूरत से ज्यादा गर्मी से बेहाल और अनाज की कमी के चलते 40 लाख लोगों की मृत्यु हुई थी। प्रो. तिवारी ने भारत में अनाज की कमी और अस्त व्यस्त जनजीवन पर चर्चा की। उन्होंने कहा चर्चिल का कहना था कि, भारत में अनाज की कमी के लिए खुद भारतीय जिम्मेदार हैं। उन्होंने केंद्र शासन द्वारा कृषि के क्षेत्र में पीएम किसान योजना के सहारे किसानों को विभिन्न प्रकार के लाभों पर भी चर्चा की। ICER द्वारा चलाई गई विभिन्न ऐप्स से हमें जुड़ना चाहिए ऐसा करने से हम कृषि से जुड़ने का एक अच्छा अवसर प्राप्त होगा। हर स्थान में अंग्रेजी के उपयोग से आज कई चीजे प्रभावित हो रहे हैं। मेरा मानना है कि अपने देश की वृद्धि के लिए हमें मातृभाषा का उपयोग हर क्षेत्र में करना आवश्यक है। जिस दिन हम हिंदी को हर क्षेत्र में अपना लेंगे उस दिन हम देश को एक बड़े पड़ाव पर ले जा सकेंगे। हमें विश्व गुरु बनने के लिए मातृभाषा का निर्वाहन एक बार फिर करना होगा।

आभार प्रदर्शन करने से पूर्व विश्वविद्यालय के कुल सचिव डॉ. सुशील मंडेरिया ने कृषि के क्षेत्र में अपने विचार रखते हुए कहा कि, हम हर्षित हैं कि पूरे विश्व में हमारे पूरी दुनिया में कृषि के लिए सबसे अधिक भूमि उपलब्ध है। हम हमारे आधुनिक ज्ञान को कृषि के क्षेत्र में समझदारी से उपयोग करें तो यह कृषि के क्षेत्र में चार चांद लगा देने के बराबर होगा। उन्होंने कई प्राकृतिक प्राचीन पद्धतियों का उदाहरण देते हुए कहा कि, हमारे पूर्वज कृषि और मौसम के क्षेत्र में कई विभिन्न प्राकृतिक पद्धतियों का इस्तेमाल करके मौसम का पूर्वानुमान लगाकर ही नई फसल रोपने और काटने का काम करते थे। वह अपनी पद्धतियों से यह पूर्व अनुमान आसानी से लगा लेते थे की साल में कितने महीने कृषि के लिए अच्छे हैं और कितने महीने सूखे बीतेंगे।

कार्यक्रम का संचालन विश्वविद्यालय के निदेशक एवं कार्यक्रम के नोडल अधिकारी डॉ. रतन सूर्यवंशी द्वारा किया गया। कार्यक्रम के अंत में आभार प्रदर्शन विश्वविद्यालय के कुल सचिव एवं कार्यक्रम के संयोजक डॉ सुशील मंडेरिया द्वारा किया गया। कृषि आधारित कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के समस्त अधिकारियों शिक्षकों कर्मचारी एवं विद्यार्थी सभागार में उपस्थित रहे।

गुरु पूर्णिमा 21 एवं 22 जूलाई 2024

मध्यप्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय भोपाल, (म.प्र.)
Madhya Pradesh Bhoj(Open) University, Bhopal (M.P)
(Accredited with Grade 'A' by NAAC)
(Established under the Act of 1991 by M.P. Legislative Assembly)

समस्त पत्र व्यवहार कुलसचिव मध्यप्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय के नाम से ही किया जावे न कि किसी अन्य पदाधिकारी के नाम से। संबंधित विषय पर यदि पूर्व में पत्र व्यवहार हुआ हो तो पत्र क्रमांक एवं दिनांक अवश्य लिखा जावे जिससे सुविधा हो।

पता : राजा भोज मार्ग, कोलार रोड, भोपाल-462016
दूरभाष : 0755-2492093
फेक्स : 0755-2424640
वेबसाइट : https://mpbou.edu.in/
ईमेल : registraroffice.mpbou@gmail.com

क्रमांक / 7835 /स्था./मप्रभोमुविवि/2024 भोपाल, दिनांक 19/07/2024

//कार्यालयीन आदेश//

म.प्र. शासन, उच्च शिक्षा विभाग मंत्रालय के पत्र दिनांक 12.07.2024 द्वारा विश्वविद्यालय में गुरुपूर्णिमा उत्सव कार्यक्रम दिनांक 21.07.2024 से 02 दिवसीय मनाये जाने के निर्देश प्राप्त हुए है। उक्त अनुक्रम में म.प्र. भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय में दो दिवसीय **गुरुपूर्णिमा उत्सव** का आयोजन **दिनांक 21 एवं 22 जुलाई, 2024 को प्रातः 10:30 बजे हॉल कमांक-25** में किया गया है।

उक्त कार्यक्रम में समस्त अधिकारियों, शिक्षकों एवं कर्मचारियों की उपस्थिति अनिवार्य है।

आदेशानुसार

सहा. कुलसचिव

पृष्ठांकन क्रमांक / 7836 / स्था. / मप्रभोमुविवि / 2024 भोपाल, दिनांक 19/07/2024
प्रतिलिपिः
1. समस्त विभागाध्यक्ष, शिक्षक, अधिकारी एवं कर्मचारी मप्रभोमुविवि, भोपाल की ओर सूचनार्थ एवं पालनार्थ।
2. प्रभारी, आउटसोर्स एजेंसी की ओर इस आशय से कि समस्त आउट सोर्स कर्मचारी कार्यक्रम में अनिवार्यता उपस्थित हो।
3. निज सहायक के माध्यम से मा. कुलपति जी/कुलसचिव म. प्र. भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय, भोपाल।

सहा. कुलसचिव

मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय में गुरु पूर्णिमा के अवसर पर "गुरु पर्व" कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मध्य प्रदेश शासन के आदेशानुसार सभी विश्वविद्यालयों में यह कार्यक्रम 2 दिवस (21 एवं 22 जुलाई 2024 को मनाया जाना था। कार्यक्रम की शुरुआत मध्यप्रदेश शासन द्वारा गुरु पूर्णिमा के अवसर पर हो रहे कार्यक्रम का सजीव प्रसारण दिखाकर हुई। यह सीधा प्रसारण देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इंदौर से किया गया।

"करता करे न कर सके
गुरु करे सो होय
सात द्वीप नौ खंड में
गुरु से बड़ा न कोय।"

द्वितीय चरण में भोज विश्वविद्यालय परिसर में कार्यक्रम का आयोजित किया गया। जिसमें भोज विश्वविद्यालय के सभी सम्माननीय गुरुजनों का सम्मान किया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में विश्वविद्यालय की लोकपाल डॉ. शोभा श्रीवास्तव उपस्थित रहीं। गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर कार्यक्रम के अध्यक्षता मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो. संजय तिवारी द्वारा की गई एवं इस अवसर पर कार्यक्रम आयोजक के रूप में विश्वविद्यालय के कुल सचिव डॉ. सुशील मंडेरिया उपस्थित रहे। कार्यक्रम के सह- आयोजक डॉ. रतन सूर्यवंशी, निदेशक, विद्यार्थी सहायता, भोज विश्वविद्यालय भी उपस्थित थे। गुरु पर्व कार्यक्रम का आयोजन विश्वविद्यालय के सभागार में किया गया। इस मौके पर विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो संजय तिवारी का सम्मान किया गया साथ ही विश्वविद्यालय के सभी शिक्षकों का भी सम्मान कर्मचारियों के द्वारा किया गया।

कार्यक्रम की मुख्य अतिथि एवं विश्वविद्यालय की लोकपाल डॉ. शोभा श्रीवास्तव ने अपने उद्बोधन में कहा कि, आज ही के दिन महर्षि वेदव्यास जी का जन्म हुआ था। उन्हीं के सम्मान में गुरु पूर्णिमा का पर्व मनाया जाता है। वैसे तो वक्त भी हमारा गुरु ही है और शिक्षक भी हमारा गुरु है किंतु शिक्षक कुछ सिखाने के बाद परीक्षा लेता है लेकिन वक्त पहले परीक्षा ले कर कुछ सिखाता है। डॉ. शोभा श्रीवास्तव ने कहा कि, प्राचीन काल में गुरुकुल एक सामुदायिक शिक्षा के केंद्र हुआ करते थे। गुरुकुल में सारे बच्चे एक समान होते थे। उनकी शिक्षा उनकी संभावनाओं के आधार पर ही दी जाती थी। इस अवसर पर डॉ. श्रीवास्तव ने एकलव्य और द्रोणाचार्य की कहानी सुनाई और कहा कि, शिव आदि गुरु है। मां हमारी प्रथम गुरु हैं। हमारे दूसरे गुरु हमारे पिता होते हैं। तीसरे गुरु हमारे शिक्षक होते हैं जो हमें अक्षर ज्ञान कराते हैं। चौथे गुरु वह होते हैं जो हमें आध्यात्मिक की शिक्षा देते हैं और पांचवा गुरु हमारी अंतरात्मा होती है। किंतु इनके अलावा भी हमारा एक गुरु होता है और वह है आईना जो हमारा सच्चा दोस्त होता है। क्योंकि वह हमें सच्चाई बताता है। डॉ. श्रीवास्तव ने कहा कि. गुरु किसी भी क्षण आपका मार्गदर्शन कर सकते हैं। हर गुरु के अंदर ब्रह्मा होता है और असली गुरु वह है जो शिष्य के अंदर के ब्रह्म के ऊपर पड़ी हुई अज्ञान की परत को हटाकर उससे शिष्य का परिचय करता है। जीवन में केवल किताबी ज्ञान को पाना ही पर्याप्त नहीं है बल्कि अनुभव के साथ शिक्षा ग्रहण करना जरूरी है। इस अवसर पर डॉ. शोभा श्रीवास्तव ने इस बात पर अपनी चिंता प्रकट की कि, आजकल बच्चों में आत्महत्या की घटनाएं बढ़ती जा रहे हैं। उन्होंने उपस्थित शिक्षकों से कहा कि हमें अपने आप को गुरु के रूप में विकसित होना होगा। हमें धैर्यवान होगा होना और छात्रों से संवाद कायम करना होगा। उन्होंने शिष्यों से कहा कि, ज्ञान का सार्थक उपयोग करना ही शिष्यों का गुरुओं के प्रति सच्ची श्रद्धा होगी।

इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो डॉ. संजय तिवारी ने कहा कि, शिक्षक के लिए शिक्षक पद के अतिरिक्त इससे बड़ी कोई पदवी नहीं हो सकती। गुरु शिष्य को प्रकाश देता है और सबसे अच्छा शिक्षक वही है जो शिष्य को प्रेरित करता है। डॉ. तिवारी ने इस संबंध में भगवान तथागत बुद्ध और उनके शिष्य आनंद की कथा सुनाई और कहा कि, भगवान बुद्ध ने अपने शिष्य को कहा कि, "अप्प दीपो भवः" मतलब अपना दीपक स्वयं बनो। डॉ. तिवारी ने भारत के प्रख्यात व्याकरण आचार्य पाणिनि का उल्लेख करते हुए, उनके द्वारा रचित अष्टाध्याई ग्रंथ की चर्चा की। डॉ. तिवारी ने शिक्षकों को प्रेरित करते हुए कहा कि, आपको अपने विषय के प्रति समर्पित होना चाहिए। उन्होंने विद्या और अविद्या के भेद को भी समझाया है। इस हेतु उन्होंने कुछ प्रसिद्ध भारतीय शिक्षकों और उनके शिष्यों के उदाहरण प्रस्तुत किये। उन्होंने शिक्षकों से कहा कि, आपके ऊपर भारत की आने वाली पीढ़ी के भविष्य को सवारने की जिम्मेदारी है।

गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर भोज विश्वविद्यालय में हो रहे कार्यक्रम का मंच संचालन मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय की वरिष्ठ सलाहकार डॉ. साधना सिंह बिसेन द्वारा किया गया। कार्यक्रम के अंत में धन्यवाद ज्ञापन विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. सुशील मंडेरिया द्वारा दिया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय परिवार के समस्त अधिकारी, विद्यार्थी शिक्षक एवं कर्मचारिगण उपस्थित रहे।

मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय में दो दिवसीय गुरु पूर्णिमा आयोजन के अंतर्गत "गुरु पर्व" कार्यक्रम संपन्न हुआ। दूसरे दिन गुरु पर्व के अवसर पर कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. चंद्र चारु त्रिपाठी, निदेशक, एन.आई.टी.टी.टी.आर. भोपाल उपस्थित रहे। साथ ही मुख्य वक्ता एवं सारस्वत अतिथि के रूप में डॉ. मुकेश कुमार मिश्रा, निदेशक, दत्तोपंत ठेंगड़ी शोध संस्थान, भोपाल ने शिरकत की। गुरु पूर्णिमा आयोजन की इस श्रृंखला में कार्यक्रम के अध्यक्षता मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो. संजय तिवारी द्वारा की गई एवं इस अवसर पर कार्यक्रम आयोजक के रूप में विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. सुशील मंडेरिया उपस्थित रहे। कार्यक्रम के नोडल अधिकारी डॉ. रतन सूर्यवंशी, निदेशक, विद्यार्थी सहायता, भोज विश्वविद्यालय भी उपस्थित थे। गुरु पर्व कार्यक्रम का आयोजन विश्वविद्यालय के सभागार में किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. चंद्र चारु त्रिपाठी ने अपने उद्बोधन में कहा कि, हमारे प्राचीन शास्त्रों में गुरु की महिमा का वर्णन मिलता है। प्रथम गुरु हमारे माता-पिता हैं। परिवार में माता-पिता होने के नाते हम सब गुरु का भी दायित्व निर्वहन करते हैं। गुरु शिष्यों की गलतियों को सुधारते हैं। वह हमें नैतिकता और कर्तव्य परायणता की शिक्षा अपने स्वयं के कार्यों और व्यवहार से देते हैं। डॉ. त्रिपाठी ने कहा कि, शिक्षकों को अपनी एक खास पहचान बनाना चाहिए। वह कुछ ऐसा करें जिससे लोग उन्हें उनके कार्यों से जाने। अगर विद्यार्थियों में कुछ करने की तीव्र इच्छा होती है तो संसाधन की कमी बाधा नहीं बनती। डॉ त्रिपाठी ने कहा कि, शिक्षकों को शिक्षक प्रादर्श बनाना चाहिए। इससे कक्षा शिक्षण को और अधिक रोचक बनाया जा सकता है। उन्होंने उपस्थित शिक्षकों से कहा कि, आप हमारे संस्थान में आकर चाहें तो अपने-अपने विषयों से संबंधित शिक्षक प्रादर्श विकसित कर सकते हैं। इसमें संस्थान आपको पूरा सहयोग करेगा। उन्होंने शिक्षा में सूचना संचार तकनीक के योगदान को रेखांकित किया। इस अवसर पर डॉ. त्रिपाठी ने भारत के शिक्षण व्यवस्था और मूल्यांकन की कमियों पर प्रकाश डाला। अगर हमें शिक्षा में गुणवत्ता लानी है तो, हमें मूल्यांकन पद्धति पर अधिक ध्यान देना होगा।

विश्व पर्यावरण दिवस कार्यक्रम
दिनांक: 05/06/2024

मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय के निदेशक डॉ. एल.पी. झरिया ने "योग एवं ज्ञान" विषय पर अपना वक्तव्य देते हुए कहा कि, भारत एक आध्यात्मिक देश है हमारे सारे काम चाहे वह सामाजिक हो, आर्थिक हो, राजनीतिक हो, यह सब धर्म पर ही आधारित होते हैं। उन्होंने प्राचीन भारत के समाज में प्रचलित चार पुरुषार्थ और चार आश्रम व्यवस्था की विवेचना की। उन्होंने कहा कि, धर्म वही है जो धारण किया जा सके। योग और आध्यात्मिक से मन पवित्र होता है। उन्होंने ज्ञान की विभिन्न विधियों की चर्चा की और आसन तथा प्राणायाम के लाभ बताएं।

इस अवसर पर मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय की सहा- निदेशक डॉ. नीलम वासनिक ने गुरु के आदर्श रूप पर अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। उन्होंने स्वामी रामतीर्थ के जीवन वृतांत की चर्चा की और उनके अद्वैत वेदांत दर्शन के बारे में बताया। उन्होंने तथागत बुद्ध के पंचशील के सिद्धांत की भी चर्चा की।

मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय के निदेशक डॉ. सुशील कुमार दुबे ने "शिक्षा में नवाचार" विषय पर चर्चा करते हुए, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में हो रहे नवाचारों की चर्चा की।

विश्व पर्यावरण दिवस कार्यक्रम
दिनांक: **05/06/2024**

मुख्य वक्ता के रूप उपस्थित डॉ. मुकेश कुमार मिश्रा ने अपने वक्तव्य में कहा कि, विश्व भर में भारत के ज्ञान परंपरा की चर्चा हो रही है। परंपरा वह है जो हर देश, काल, परिस्थिति में अपने आप को परिष्कृत करते हुए खुद को श्रेष्ठ बनाए रखती है। जबकि ट्रेडीशन वह है जो जैसे के तैसे चलता रहता है। उन्होंने महाभारत के कर्ण और परशुराम की कथा का उदाहरण देते हुए बताया कि, कभी भी छल से प्राप्त की गई विद्या काम नहीं आती है। डॉ. मिश्रा ने कहा कि, भारत में विभिन्न प्रकार के पंथ हैं। किंतु सभी पंथों में गुरु का स्थान सर्वोच्च रहा है। भारत भूमि की सभी विचारधाराओं में गुरु का श्रेष्ठ स्थान है। भारत ज्ञान की भूमि है, ज्ञान का गुरु से गहरा नाता है। ज्ञान शाश्वत और सत्य है। गुरु ज्ञान पर पड़े आवरण को हटाकर उसी ज्ञान को नए-नए रूप में प्रकट करते हैं। यही हमारी परंपरा रही है। उन्होंने गुरु पूर्णिमा के महत्व और प्रासंगिकता पर भी चर्चा की। डॉ. मिश्रा ने कहा कि, गुरु का आचरण ही सही मायने में शिष्य को प्रेरणा देता है। शिक्षकों को अपने आचरण पर अधिक बल देने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि, गुरु वही है जो,जानकारी से ज्ञान की ओर ले जाए, ज्ञान से विवेक जागृत कर दे और विवेक से अध्यात्म की ओर ले जाए। डॉ. मिश्रा ने कहा कि हमारे भारत की ज्ञान परंपरा मुक्त गामी है। अच्छा गुरु शिष्य के जीवन को सार्थक बनाने के लिए प्रेरित करता है।

विश्व पर्यावरण दिवस कार्यक्रम
दिनांक: 05/06/2024

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो संजय तिवारी ने कहा कि, लौकिक शिक्षा से ज्ञान मिलता है। किंतु आध्यात्मिक शिक्षा से नैतिकता, शील और करुणा आती है। यही हमारी भारतीय ज्ञान परंपरा का मूल तत्व है। बच्चों को बचपन से ही धर्म की शिक्षा दी जानी चाहिए। डॉ. तिवारी ने कहा कि,भारतीय शिक्षण परंपरा की ओर विश्व के अन्य देश आशा भरी नजरों से देख रहे हैं। अच्छा शिक्षक ज्ञानी होना चाहिए और उसमें ज्ञान को संक्रमण कर शिष्य में उतरने की कल भी आनी चाहिए। शिक्षक को आकाश धर्मी होना चाहिए अर्थात जिस तरह आकाश अपने नीचे सभी प्रकार के जीव, जंतु, वनस्पतियों, वृक्षों, नदियां, पहाड़ को विकसित होने का पूर्ण मौका देता है। ऐसा ही व्यक्तित्व गुरु का भी होना चाहिए। जिसके तले शिष्य को विकसित होने का मौका मिल सके। अंत में उन्होंने कहा कि, प्राचीन काल में विश्वविद्यालय समाज आधारित होते थे।समाज ही विश्वविद्यालय की आवश्यकताओं को पूरा किया करते थे।

कार्यक्रम के अंत में धन्यवाद् व्यक्त करने के पूर्व विश्वविद्यालय के कुलसचिव एवं कार्यक्रम के आयोजक डॉ. सुशील मेडेरिया ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि, सैद्धांतिक शिक्षा के साथ-साथ व्यवहारिक शिक्षा भी अधिक महत्व पूर्ण होती है। उन्होंने अपने जीवन के दृष्टांत को बताते हुए, व्यवहारिक ज्ञान के महत्व पर बोल दिया।

गुरु पर्व के समापन कार्यक्रम के अवसर पर भोज विश्वविद्यालय में आयोजित कार्यक्रम का मंच संचालन मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय की वरिष्ठ सलाहकार डॉ. साधना सिंह बिसेन द्वारा किया गया। कार्यक्रम के अंत में आभार प्रदर्शन विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. सुशील मंडेरिया द्वारा दिया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय परिवार के समस्त अधिकारी, विद्यार्थी, शिक्षक एवं कर्मचारीगण उपस्थित रहे।

गणतंत्र दिवस **15/08/2024**

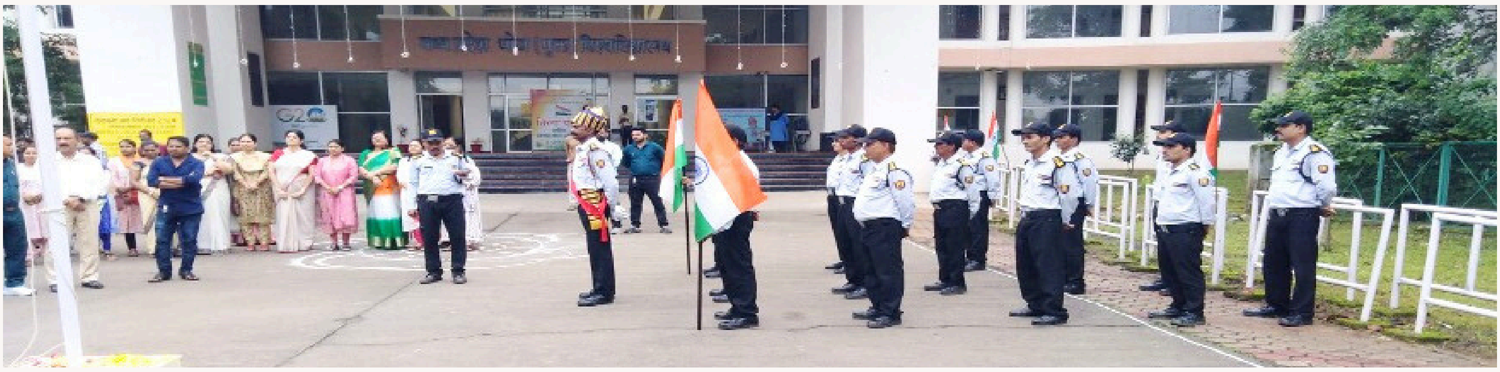

नेताजी सुभाष ओपन युनिवर्सिटी, कोलकाता के साथ समझोता ज्ञापन
22/08/2024

"राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं भारतीय ज्ञान परम्परा" विषय पर कार्यशाला
29/08/2024

मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय में "राष्ट्रीय शिक्षा नीति और भारतीय ज्ञान परंपरा" विषय पर कार्यक्रम आयोजित हुआ। बीजवक्ता के रूप में अपने विचार व्यक्त करते हुए, मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी के संचालक डॉ. अशोक कड़ेल ने कहा कि, भारत में अलग-अलग संस्कृतियों और भाषाओं के बावजूद हम सब की एक भारतीय संस्कृति है। भारत एक उत्सव धर्मी देश रहा है। शिक्षा का उद्देश्य ही है कि, आपका जीवन उत्सव से पूर्ण होना चाहिए। उन्होंने कहा कि, जितना अंधकार है, वह प्रकाश में समा जाए और जो अज्ञान है वह ज्ञान में समा जाए, यही भावना रही है। डॉ. कड़ेल ने कहा कि, कष्ट में भी आनंद की अनुभूति हमारे देश की परंपराओं में रही है। इसी का ज्ञान हमारे आने वाले पीढ़ियां को भी करवाना आवश्यक है। प्राचीन ग्रंथो में कहा गया है कि, 1000 हाथ से कमाएँ और 100 हाथ से दान भी करें। समाज के दीन दुखियो को दान देने की सीख विद्यार्थियों को देने की आवश्यकता है। डॉ. अशोक ने इस अवसर पर महाभारत के श्री कृष्ण और कर्ण के जीवन की चर्चा की और उनमें समानताओं और असमानताओं की भी चर्चा करते हुए कहा कि, श्री कृष्ण की शिक्षाएं आज भी हमारे लिए प्रासंगिक हैं। हमें श्री कृष्ण के जीवन से प्रेरणा लेकर अपनी आज की समस्याओं का सामना करना चाहिए। उत्सव धर्मिता हर व्यक्ति के जीवन में आना चाहिए। हर ऋतु में हमारे यहां कोई ना कोई उत्सव होता है। प्रकृति की रक्षा करना हमारी पुरातन संस्कृति का अभिन्न अंग रहा है। हम प्रकृति उपासक के रूप में जाने जाते हैं। आज हमारे सामने ग्लोबल वार्मिंग, पर्यावरण प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन जैसी समस्याएं खड़ी हैं। इन सबके लिए हमारी नीति एवं व्यवहार ही जिम्मेदार है। हमें अपनी प्रगति के साथ-साथ प्रकृति का भी ध्यान रखने की आवश्यकता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति का मुख्य उद्देश्य ऐसे नागरिकों का निर्माण करना है जो विचार, व्यवहार और कार्य से विश्व कल्याण के लिए समर्पित हों। विद्यार्थियों को सत्य एवं प्रज्ञा के मार्ग पर ले जाना और उन्हें आत्मिक ज्ञान की ओर प्रेरित करना तथा समग्रता एवं भारत केंद्रित शिक्षा ही राष्ट्रीय शिक्षा नीति का मूल उद्देश्य है। मानवता एवं विश्व के कल्याण की भावना भारत में पुरातन काल से रही है, इसीलिए भारत विश्व गुरु रहा है। विश्व का नेतृत्व केवल भारत ही कर सकता है इसके दर्शन में ही विश्व को दिशा देने की क्षमता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में जीवन चलाने से लेकर आत्मिक ज्ञान तक की शिक्षा देने की संकल्पना निहीत है। श्री अशोक कड़ेल ने यह भी कहा कि, श्री कृष्ण द्वारा कही गई बातों को उपयोग में लाना होगा। पढ़ी गई बातों को अपने जीवन में उतरना ज्यादा आवश्यक है। विद्यार्थियों में धैर्य न होने के कारण उनमें आत्महत्या की प्रवृत्ति में वृद्धि देखी जा रही है। विद्यार्थियों में गुण और अवगुण दोनों होते हैं, किंतु हमारी शिक्षण संस्थाएं उनके गुणों के विकास के लिए तथा अवगुणों के शमन के लिए उचित वातावरण प्रदान करते हैं। हमारी शिक्षण संस्थाएं पंचकोशीय विकास के लिए विभिन्न गतिविधियां आयोजित करती हैं। हमारी शिक्षा में अध्यात्म होना आवश्यक है और निस्वार्थ भाव से गरीबों की सेवा करना है आध्यात्मिकता है। शिक्षा का भारतीयकरण करना अत्यंत आवश्यक है। यदि शरीर को निरोग करना है तथा मानसिक बीमारियों का सही इलाज अगर कोई है तो वह योग में ही है। हमें प्राचीन ज्ञान के साथ नवीन ज्ञान को भी समाहित करना होगा। डॉ. अशोक कड़ेल कहा कि, भारतीय ज्ञान परंपरा में और अधिक शोध की आवश्यकता है।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि डॉ. भरत मिश्रा, कुलगुरु, महात्मा गांधी चित्रकूट विश्वविद्यालय चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय ने अपने उद्बोधन में कहा कि, भारत में प्राचीन काल में गुरुकुल की शिक्षा व्यवस्था थी। गुरुओं का स्थान तो भगवान से भी ऊपर रखा गया है। औपनिवेषिक काल की शिक्षा से आज भारत बाहर निकल रहा है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में बहुविषयक दृष्टिकोण है। परंपरागत शिक्षा के बंधन से अब मुक्ति मिल गई है। नई शिक्षा नीति के आने से भाषाई कुंठा से मुक्ति मिली है। इसमें विद्यार्थियों को विषय चयन की स्वतंत्रता है और विद्यार्थियों में मानवीय गुणों के विकास पर बल दिया गया है।
कार्यक्रम के अध्यक्षता कर रहे, मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो. संजय तिवारी ने कहा कि, राष्ट्रीय शिक्षा नीति वास्तव में स्वयं को पहचानने का प्रयास है। उन्होंने कहा कि, लॉर्ड मैकाले ने पाश्चात्य शिक्षा पद्धति लागू कर हमारी ज्ञान परंपरा का नाश कर दिया। अब पाश्चात्य शिक्षा पद्धति को खत्म करने का काम इतने लंबे अंतराल के बाद होने जा रहा है। उन्होंने कहा कि, अभी भी हम गुलामी की मानसिकता से पूरी तरह मुक्त नहीं हो पा रहे हैं। उन्होंने कहा कि, राष्ट्रीय शिक्षा नीति का मुख्य बल कौशल विकास पर है। इसमें विश्व बंधुत्व का भाव है और भारतीयता के प्रति गौरव बोध है। लौकिक शिक्षा तो पूरे विश्व में दी जाती है किंतु आध्यात्मिक शिक्षा केवल भारत में दी जाती है। लौकिक शिक्षा और आध्यात्मिक शिक्षा का उचित समन्वय होना चाहिए। डॉ. तिवारी ने इस अवसर पर दीनदयाल उपाध्याय को याद करते हुए कहा कि, विकसित भारत बनने के लिए हमें प्रचुर मात्रा में उत्पादन करना होगा। उत्पादन का सामान वितरण करना होगा, जो कि भेदभाव से रहित हो और उपभोग में संयम रखना होगा।
कार्यक्रम का संचालन मध्यप्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय के निदेशक डॉ. रतन सूर्यवंशी द्वारा किया गया तथा धन्यवाद ज्ञापन मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. सुशील मंडेरिया द्वारा किया गया। इस अवसर पर सभागार में शिक्षा जगत के विद्वानों सहित विश्वविद्यालय के समस्त शिक्षक, अधिकारी एवं कर्मचारी गण उपस्थित रहे।

उत्कृष्ट बालिकाओं का सम्मान एवं रक्षा बंधन
लाईव टेलीकास्ट **11/08/24**

मध्यप्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय भोपाल, (म.प्र.)
Madhya Pradesh Bhoj(Open) University, Bhopal (M.P)
(Accredited with Grade 'A' by NAAC)
(Established under the Act of 1991 by M.P. Legislative Assembly)

समस्त पत्र व्यवहार कुलसचिव मध्यप्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय के नाम से ही किया जावे न कि किसी अन्य पदाधिकारी के नाम से। संबंधित विषय पर यदि पूर्व मे पत्र व्यवहार हुआ हो तो पत्र क्रमांक एवं दिनांक अवश्य लिखा जावे जिससे सुविधा हो।

पता : राजा भोज मार्ग, कोलार रोड, भोपाल–462016
दूरभाष : 0755–2492093
फेक्स : 0755–2424640
वेबसाइट : https://mpbou.edu.in/
ईमेल : registraroffice.mpbou@gmail.com

क्रमांक/8004/स्था/मप्रभोमुविवि/2024 भोपाल,दिनांक 09/08/2024

//आदेश//

माननीय मुख्यमंत्री जी, मध्यप्रदेश शासन, द्वारा महाविद्यालयीन एवं विद्यालयीन बालिकाओं के सम्मान एवं संवाद का कार्यक्रम रवीन्द्र भवन, भोपाल में दिनांक 11.08.2024 को प्रातः 11:30 बजे से आयोजित किया जा रहा है, जिसका प्रसारण मध्यप्रदेश के समस्त विश्वविद्यालयों तथा समस्त महाविद्यालयों (शासकीय, अनुदान प्राप्त अशासकीय) में अनिवार्यतः किया जाना है।

अतः मध्यप्रदेश शासन, उच्च शिक्षा विभाग के निर्देशानुसार विश्वविद्यालय सभा कक्ष–25 में प्रातः 11:00 बजे समस्त अधिकारी, शिक्षक तथा कर्मचारियों की उपस्थिति अनिवार्य है।

प्र.कुलसचिव

पृ.क्र./8005/स्था/मप्रभोमुविवि/2024 भोपाल,दिनांक 09/08/2024

प्रतिलिपि :–

(1) निज सहायक के माध्यम से माननीय कुलपति जी की ओर सूचनार्थ प्रेषित।
(2) समस्त शिक्षक, अधिकारी एवं कर्मचारियों की ओर सूचनार्थ एवं पालनार्थ।
(3) आई.टी. शाखा की ओर इस आशय के साथ कि कार्यक्रम के प्रसारण हेतु ऑडियो– वीडियो की व्यवस्था करें।

प्र.कुलसचिव

सघन वृक्षा रोपण एवं तिरंगा यात्रा
" एक पेड़ माँ के नाम" 14/08/2024

मध्यप्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय भोपाल, (म.प्र.)
Madhya Pradesh Bhoj (Open) University, Bhopal (M.P.)
(Accredited with Grade 'A' by NAAC)

वेबसाइट http://mpbou.edu.in/
ईमेल registraroffice.mpbou@gmail.com

क्रमांक /8014/ या.शा./मप्रभोमुविवि/2024 भोपाल, दिनाँक 13/08/20

//सूचना//

मध्यप्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय परिसर में हरियाली महोत्सव एवं "एक पेड़ माँ के नाम **अभियान**" अंतर्गत दिनांक 14/08/2024 को प्रातः 11:30 बजे सघन वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया है। जिसमें आप सभी अधिकारियों/कर्मचारियों की उपस्थिति सुनिश्चित करें।

आदेशानुसार

कुलसचिव

क्रमांक /8015/ यां. शा./म.प्र.भो.मु.वि.वि./2024 भोपाल, दिनांक 13/08/2024

प्रतिलिपि:

1. निज सचिव के माध्यम से माननीय कुलपति जी की ओर सूचनार्थ।
2. वित्त नियंत्रक, म0 प्र0 भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय।
3. समस्त सदस्यो की ओर सूचनार्थ।

निर्देशक सीका

प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय

हार्दिक
14 अगस्त, 2024

मध्यप्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय, भोपाल
(नैक द्वारा 'A' ग्रेड प्रदत्त)
78 वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर आयोजित
तिरंगा यात्रा
हार्दिक
स्वागत-वंदन-अभिनंदन
14 अगस्त, 2024

भारतीय पुनर्वास परिषद द्वारा विश्वविद्यालय का दिनांक 12 सितंबर 2024 को वर्चुअल मूल्यांकन

भारतीय पुनर्वास परिषद की टीम ने 12 सितंबर 2024 को विश्वविद्यालय के विशेष शिक्षा विभाग का वर्चुअल मूल्यांकन किया। आरसीआई ने डॉ. अजीत कुमार, निदेशक समग्र पुरार्वास केंद्र , अहमदाबाद और डॉ. नागेश्वर राव, क्षेत्रीय निदेशक, अली यावर जंग राष्ट्रीय वाणी एवं श्रवण विकलांगता संस्थान, कोलकाता को मूल्यांकन समिति हेतु नामित किया। विशेषज्ञों ने चल रहे कार्यक्रम बी.एड. विशेष शिक्षा और प्रस्तावित कार्यक्रमों का मूल्यांकन किया जिसमे एम.एड. विशेष शिक्षा, पुनर्वास मनोविज्ञान में पीजी डिप्लोमा (PGDRP), विकलांगता पुनर्वास प्रबंधन में पीजी डिप्लोमा (PGDDRP) और Certificate Course in Early Childhood Education Enabling Inclusion शामिल है।

विशेषज्ञों ने लाइब्रेरी, परीक्षा एवं मूल्यांकन, भवन अधोसंरचना, ईएमपीआरसी एवं प्रयोगशालाओं सहित सभी विभागों का वर्चुअल दौरा किया। निदेशकों एवं विभागाध्यक्षों ने अपने-अपने विभागों का संक्षिप्त प्रस्तुतीकरण दिया। विशेषज्ञों की जिज्ञासाओं का समाधान करने एवं वांछित दस्तावेज प्रस्तुत करने के पश्चात वर्चुअल मूल्यांकन संपन्न हुआ।

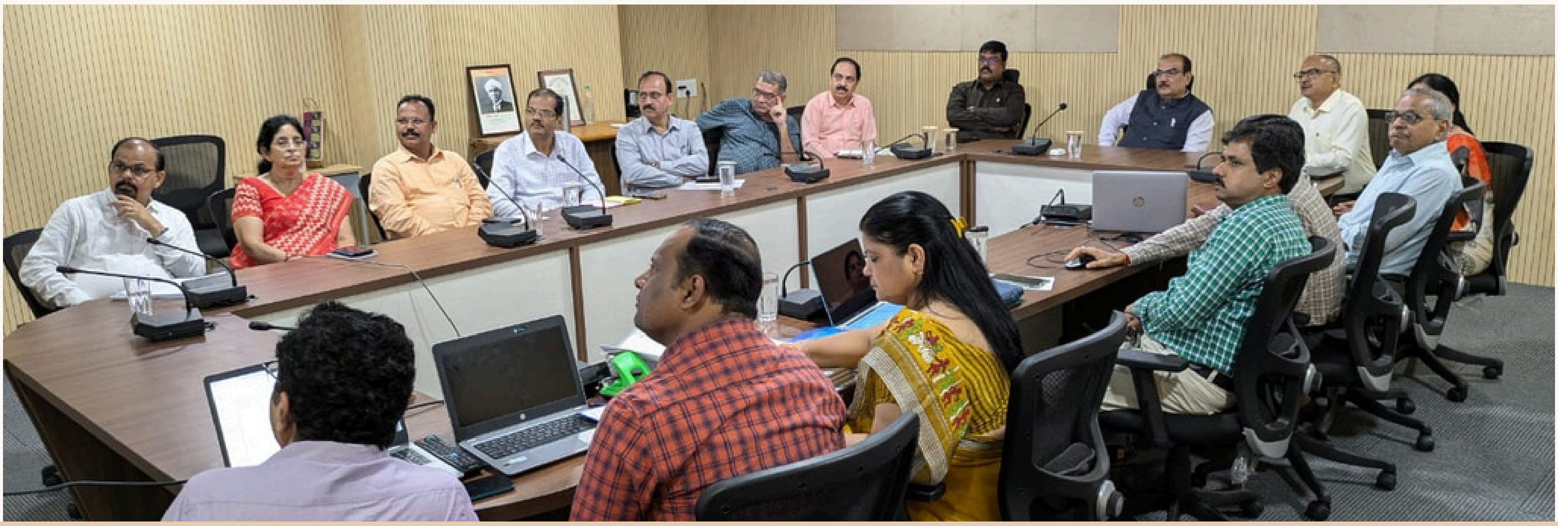

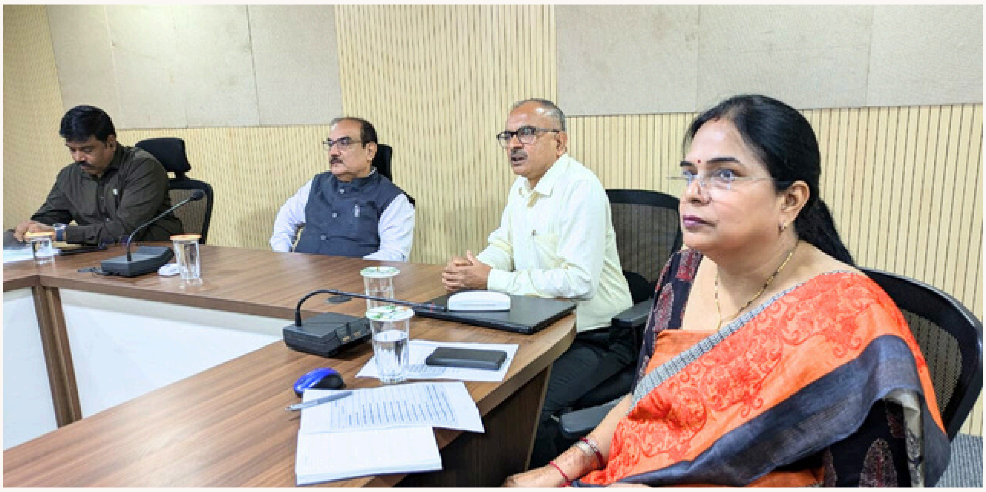

माननीय कुलपति प्रो. डॉ. संजय तिवारी ने विशेषज्ञों का स्वागत किया और विश्वविद्यालय की महत्वपूर्ण उपलब्धियों और गतिविधियों के बारे में जानकारी दी। इसके बाद विशेष शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. हेमंत केशवाल ने विश्वविद्यालय की गतिविधियों पर प्रस्तुति दी। आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन केंद्र की उपनिदेशक डॉ. अनीता कौशल ने विशेषज्ञों को सामुदायिक आउटरीच और अल्पकालिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के बारे में जानकारी दी।

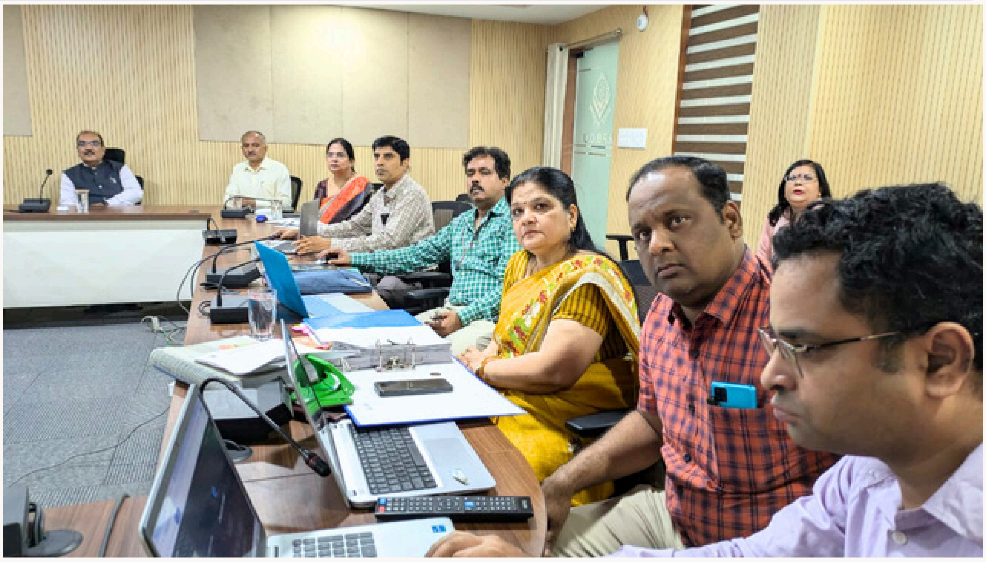

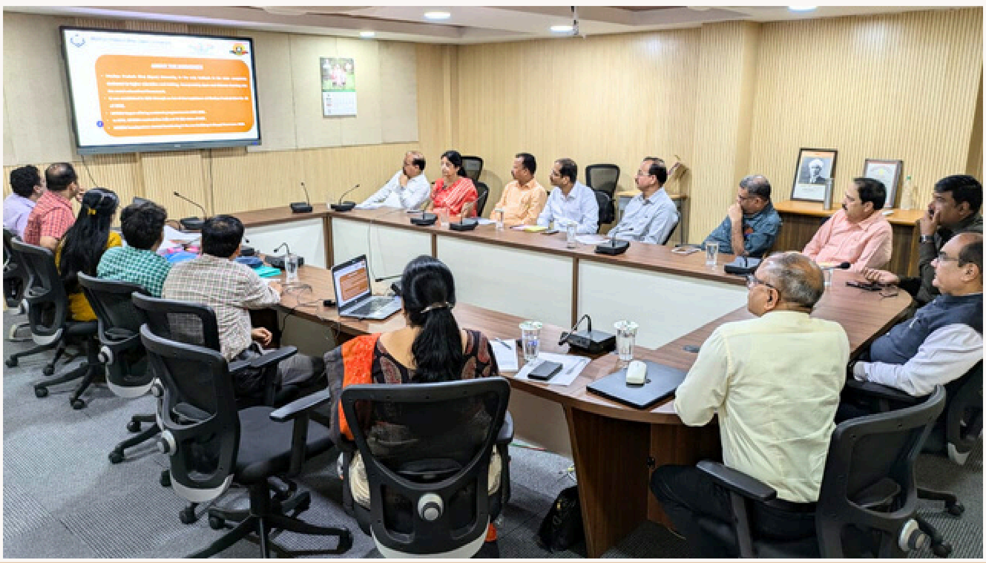

विशेष शिक्षा विभाग द्वारा नवीन अध्ययन केन्द्रों के लिए एक दिवसीय कार्यशाला का दिनांक 12 सितंबर 2024 को आयोजन

बी.एड. विशेष शिक्षा के नवीन अध्ययन केन्द्रों के लिए एक दिवसीय कार्यशाला विशेष शिक्षा विभाग, एमपीबीओयू ने 12 सितम्बर 24 को आयोजित की, जिसका उद्देश्य अध्ययन केन्द्रों को प्रवेश, परीक्षा एवं सामान्य कार्यप्रणाली के बारे में जानकारी देना था। कार्यक्रम में राधारमण विशेष शिक्षा संस्थान टीकमगढ़, मन विशेष शिक्षा एवं पुर्नवास शिक्षण संस्थान गुना, मध्य प्रदेश विकलांग सहायता समिति उज्जैन, स्वामी विवेकानंद महाविद्यालय पन्ना, दिग्दर्शिका पुनर्वास एवं अनुसन्धान संस्थान भोपाल एवं एस एस कॉलेज भोपाल से 20 समन्वयक, प्राचार्य एवं निदेशक गण उपस्थित थे। छात्र सहायता विभाग के निदेशक डॉ. रतन सूर्यवंशी एवं डॉ. शैलेन्द्र सिंह ने अध्ययन केन्द्रों की भूमिका एवं दायित्वों पर प्रस्तुति दी। एमपीऑनलाइन के श्री नितिन लोधी ने श्रोताओं को ऑनलाइन प्रवेश, काउंसलिंग एवं प्रवेश प्रक्रिया के बारे में जानकारी दी। डॉ. ज्योति पाराशर, समन्वयक, विशेष शिक्षा विभाग ने व्यक्तिगत संपर्क कार्यक्रम, परीक्षा, वार्षिक कैलेंडर आदि पर विचार-विमर्श किया।

मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय के 7वें दीक्षांत समारोह के संबंध में प्रेस 28 सितंबर 2024

मध्यप्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय का सप्तम् दीक्षांत समारोह 01 अक्टूबर, 2024 को कुशाभाऊ ठाकरे अंतर्राष्ट्रीय सभागार में प्रातः 11:00 बजे से प्रदेश के मान. राज्यपाल एवं कुलाधिपति श्री मंगुभाई पटेल की गरिमापूर्ण अध्यक्षता में सम्पन्न होने जा रहा है। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. मोहन यादव मान. मुख्य मंत्री मध्यप्रदेश शासन होंगे जबकि विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री इंदरसिंह परमार, मान. मंत्री मध्यप्रदेश शासन, उच्च एवं तकनीकी शिक्षा तथा आयुष विभाग होंगे।

दीक्षांत उद्बोधन भारत के सुप्रसिद्ध परमाणु वैज्ञानिक एवं इंजीनियर पद्म श्री विभूषण डॉ. अनिल काकोडकर द्वारा दिया जायेगा। डॉ. काकोडकर वर्तमान में चान्सलर होमी जहांगीर भाभा नेशनल इंस्टीट्यूट हैं। इस अवसर पर पद्म श्री डॉ. अशोक झुनझुनवाला, जो कि देश के लब्ध प्रतिष्ठित वैज्ञानिक और शिक्षाविद् हैं। वे भी उपस्थित रहेंगे। इसके अतिरिक्त देश के उच्च शिक्षा के एक प्रतिष्ठित शिक्षाविद् और प्रशासक इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ. नागेश्वर राव भौतिकी और पदार्थ विज्ञान प्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ. जतिंदर वीर यखमी एवं वरिष्ठ वृद्ध चिकित्सा विशेषज्ञ डॉ. ओम प्रकाश शर्मा भी उपस्थित रहेंगे। इसके अतिरिक्त विश्व प्रसिद्ध भारतीय सैद्धांतिक भौतिक विज्ञानी डॉ. अतिश दाभोलकर वर्चुअली उपस्थित रहेंगे। विश्वविद्यालय द्वारा इन सभी छः हस्तियों को मानद उपाधि से अलंकृत किया जाएगा।

यह पहला अवसर है जबकि विश्वविद्यालय को एक साथ 06 मानद उपाधियां प्रदान करने का गौरव प्राप्त हुआ है। इसके पूर्व भारत रत्न श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी पूर्व प्रधान मंत्री भारत को भी मानद उपाधि प्रदान करने का गौरव विश्वविद्यालय को प्राप्त हो चुका है। विश्वविद्यालय द्वारा प्रथम बार विभिन्न विषयों की प्रावीण्य सूची में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को राजा भोज उत्कृष्टता पदक प्रदान किये जा रहे हैं। इस बार विश्वविद्यालय की परीक्षा 2022-23 में जिन विद्यार्थियों ने प्रथम स्थान प्राप्त किया था उन्हें पदक दिये जायेंगे।

क्र. उपाधियां संख्या

1. मानद उपाधि 06
2. राजा भोज उत्कृष्टता पदक 27
3. स्नातक उपाधि 161
4. स्नातकोत्तर उपाधि 169

प्रेस कॉन्फ्रेंस में कुलगुरू प्रो. (डॉ.) संजय तिवारी, दीक्षांत संयोजक डॉ. सुशील मंडेरिया कुलसचिव, आयोजन समिति अध्यक्ष, निदेशक डॉ. रतन सूर्यवंशी एवं उपनिदेशक विद्यार्थी सहायता डॉ. शैलेन्द्र सिंह उपस्थित थे।

आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन केंद्र (CIQA) की बाह्य समिति की तृतीय बैठक दिनांक 30/09/2024

बैठक की अध्यक्षता मध्यप्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. संजय तिवारी द्वारा की गई। इस अवसर पर कुलसचिव डॉ. सुशील मंडेरिया भी उपस्थित रहे। समिति में बाह्य सदस्यों के रूप में प्रो. (डॉ) राजेंद्र प्रसाद दास, कुलपति, कृष्ण कांत हांडिक स्टेट ओपन यूनिवर्सिटी गोवाहाटी, असम, ऑन लाइन माध्यम से उपस्थित रहे, बैठक में प्रो. डॉ. संतोष पांडा, डायरेक्टर STRIDE, इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली एवं विश्वविद्यालय के आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन केंद्र के सभी आंतरिक सदस्य उपस्थित रहे।

सर्वप्रथम CIQA की निदेशक डॉ विभा मिश्रा द्वारा सभी का स्वागत किया गया तत्पश्चात बैठक में आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन केंद्र की उप-निदेशक डॉ अनीता कौशल ने एक प्रजेंटेशन द्वारा विश्वविद्यालय की वार्षिक गतिविधियों एवं उपलब्धियों के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई एवं सभी सदस्यों द्वारा एजेंडा के बिंदुओं पर गहन चर्चा की गई तथा विश्वविद्यालय के तीन मुख्य क्षेत्रों अकादमिक, प्रशासनिक एवं अधोसंरचना से संबंधित विषयों पर विचार विमर्श हुआ।